सदस्य बनें

सच और सरोकार की पत्रकारिता से जुड़ें
वार्षिक सदस्यता : ₹ 1000 मात्र
पूरा वर्ष अखबार निःशुल्क
पैनल विज्ञापन दें
अपने व्यवसाय/संस्था का प्रचार करें 'जन जन विचार' में।
किफायती • प्रभावी • विश्वसनीय
संपर्क : 94354 09990/ 69001 26012

जन जन की बात जन जन तक

जन जन विचार

साप्ताहिक

D.S. Associates

Sri Om Plaza
2nd Floor, K.C. Road,
Chatribari, Guwahati-1
Phone : 7002682705

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367 :: Guwahati, Friday, 13 February 2026 :: Vol-5 Year-1 :: शुक्रवार । 13 फरवरी 2026। शक संवत 1947। माघ । शुक्ल । सप्तमी। :: पृष्ठ-12। मूल्य - 5 रुपए

जन चिंतन

खुद को टटोलें

बुरा जो देखन मैं चला,
बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना,
मुझसे बुरा न कोय॥

संत कबीर का दोहा हमें सिखाता है कि दूसरों में दोष खोजने से पहले हमें अपने भीतर झांकना चाहिए। लेकिन आज का भारत इस सीख को भूलता जा रहा है। आज देश जिस तेजी से धार्मिक ध्रुवीकरण की ओर बढ़ रहा है, वह चिंता का विषय बन चुका है।

एक वर्ग यह कहता है कि इसकी शुरुआत मुस्लिम समाज के कुछ कट्टर तत्वों ने की-कट्टरता, अलगाव की मानसिकता और तुष्टिकरण की राजनीति ने सामाजिक संतुलन बिगाड़ा। दूसरी ओर, अब प्रतिक्रिया में हिंदू समाज संगठित हो रहा है, अपनी पहचान और अधिकारों को लेकर मुखर हो रहा है।

सच यह है कि यह 'कार्रवाई और प्रतिक्रिया' का सिलसिला देश को धीरे-धीरे एक खतरनाक रास्ते पर ले जा रहा है। धार्मिक तनाव अपने आप नहीं बढ़ता। इसे हवा दी **शेष पृष्ठ 2 पर**

हिंदू राष्ट्र बनेगा हिंदुस्तान!

फाइल फोटो

भारत आज एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है। देश की राजनीति, समाज और विचारधारा में जो परिवर्तन दिखाई दे रहा है, वह साफ संकेत देता है कि 'हिंदू राष्ट्र' अब केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक मजबूत जनभावना बनता जा रहा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सख्त कार्यशैली और असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा की खुली चुनौती समेत भाजपा शासित राज्यों की सरकारों की गतिविधियों से स्पष्ट हो गया है कि देश में 'हिंदुत्व की धार' तेज हुई है। इसके साथ ही, भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को नई ऊर्जा मिली है।

वहीं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत लगातार सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक मूल्यों पर जोर देते रहे हैं।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक मूल्यों ने देश में एक नई वैचारिक धारा को जन्म दिया है। अब देश का बहुसंख्यक समाज अपने सम्मान की बात कर रहा है।

आस्था से आत्मसम्मान तक का सफर

अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण, काशी विश्वनाथ और महाकाल लोक का पुनरुद्धार, प्रयागराज और मथुरा के धार्मिक स्थलों का विकास-ये केवल निर्माण कार्य नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना की पुनर्स्थापना के प्रतीक हैं। लंबे समय तक उपेक्षित रही आस्था को अब राष्ट्रीय सम्मान मिला है। हिंदू समाज में यह भावना मजबूत हुई है कि उसकी पहचान अब हाशिए पर नहीं रहेगी।

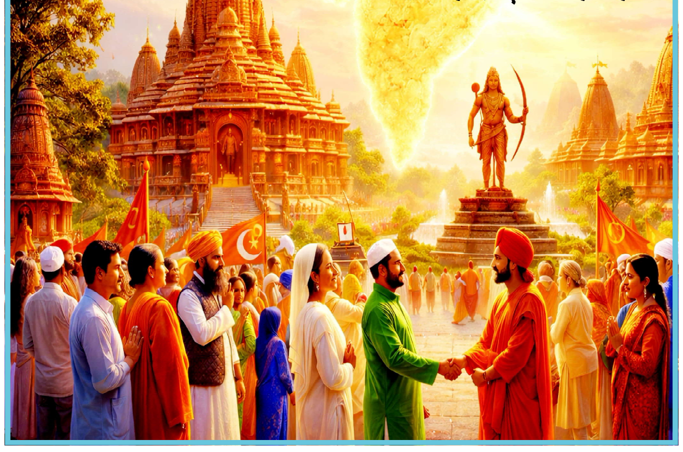

विचार से व्यवस्था की ओर

आज 'हिंदू राष्ट्र बनेगा हिंदुस्तान' केवल भावनात्मक नारा नहीं रहा। यह एक सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक परिवर्तन का संकेत है। यह बदलाव धीरे-धीरे, शांतिपूर्वक, जनसमर्थन के साथ आगे बढ़ रहा है।

अब चुनौती यह है कि इस चेतना को नफरत नहीं, बल्कि जिम्मेदारी और सद्भाव के साथ आगे बढ़ाया जाए।

यदि ऐसा हुआ, तो आने वाले वर्षों में भारत न केवल विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्था होगा, बल्कि सांस्कृतिक मार्गदर्शक राष्ट्र के रूप में भी स्थापित होगा।

पड़ोसी देशों की घटनाओं से बढ़ी चेतना

बांग्लादेश और अन्य पड़ोसी देशों में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचारों ने भारत के हिंदू समाज को झकझोर दिया है। आज लोग पूछ रहे हैं, 'अगर वहां हमारे लोग सुरक्षित नहीं, तो हमें यहां अपनी जड़ों को और मजबूत क्यों न करें?' यही चिंता अब हिंदू राष्ट्र की सोच को जन-आंदोलन में बदल रही है।

विपक्ष की राजनीति और जनभावना की टक्कर

विपक्ष लगातार 'ध्रुवीकरण' और 'खतरे' की बात करता रहा है, लेकिन जनता अब इस भाषा से प्रभावित नहीं हो रही। लोग मानने लगे हैं कि, 'संस्कृति पर गर्व करना कट्टरता नहीं, अपनी पहचान बचाना अपराध नहीं।'इसी कारण विपक्ष की विभाजनकारी रणनीतियां धीरे-धीरे कमजोर पड़ रही हैं।

कड़वा सवाल भी

कोटद्वार में जिम संचालक दीपक कुमार की कहानी आज एक कड़वा सवाल खड़ा करती है-क्या यही होगा हिंदू राष्ट्र।

एक मुस्लिम दुकानदार का साथ देना दीपक को इतना भारी पड़ा कि उनके जिम के 150 सदस्य घटकर 15 रह गए। आमदनी खत्म, कर्ज बढ़ा और समाज ने दूरी बना ली।

विवाद 'बाबा' नाम की दुकान से शुरू हुआ और दीपक के 'मोहम्मद दीपक' कहने पर भड़क गया। इसके बाद बजरंग दल समेत कई संगठनों के विरोध ने माहौल और **शेष पृष्ठ 3 पर**

'हिंदू राष्ट्र' भारत के लिए, किसी के खिलाफ नहीं

हिंदू राष्ट्र की अवधारणा को अक्सर गलत तरीके से पेश किया जाता है। समर्थकों का कहना है कि इसका अर्थ किसी पर वर्चस्व नहीं, बल्कि भारत की मूल आत्मा को केंद्र में रखना है।

यह सोच कहती है-सभी धर्मों का सम्मान, लेकिन राष्ट्रीय पहचान पर गर्व। संविधान के साथ संस्कृति का संतुलन। यही नए भारत की परिकल्पना है।

आज का युवा केवल रोजगार ही नहीं चाहता, वह उद्देश्य भी चाहता है। राष्ट्र, संस्कृति और परंपरा से जुड़ाव अब युवाओं की पहचान बनता जा रहा है। सोशल मीडिया से लेकर सार्वजनिक मंचों तक 'हिंदू राष्ट्र' की आवाज तेज हो रही है। यह बदलाव स्थायी संकेत देता है।

भारत अब केवल विकासशील देश नहीं, बल्कि सांस्कृतिक नेतृत्वकर्ता बनने की ओर बढ़ रहा है। योग, आयुर्वेद, भारतीय दर्शन और जीवन मूल्यों को दुनिया अपना रही है।

हिंदू राष्ट्र की सोच इसी आत्मविश्वास की अभिव्यक्ति है।

अंदर पढ़ें

3. असम विस चुनाव : भाजपा का लक्ष्य
4. जमीन के नीचे दौड़ेगी रेल
5. संभली मणिपुर की नैया, खेमचंद बने
7. विकसित भारत का बजट
8. बिहार : गांव बनेंगे 'बिजनेस हब'
9. अमेरिका से ट्रेड डील
10. टी 20 : बादशाहत बरकरार रखेगी
11. अमेरिका से ट्रेड डील

विस चुनाव : सेंट्रल गुवाहाटी बना सियासी रणक्षेत्र

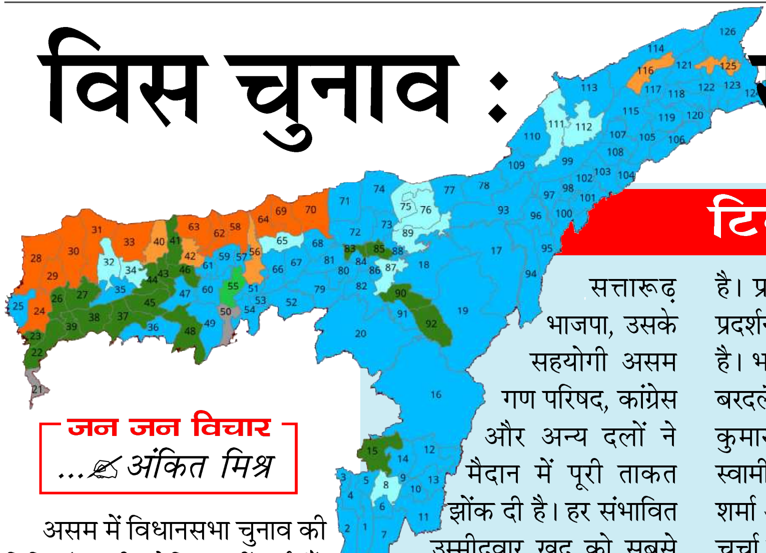

टिकट की जंग, दावेदारों की सक्रियता बढ़ी

जन जन विचार
...✍ अंकित मिश्र

असम में विधानसभा चुनाव की तिथियां अभी घोषित नहीं हुई हैं, लेकिन सियासी सरगर्मी अपने चरम पर पहुंच चुकी है। कयास लगाए जा रहे हैं कि मार्च में कभी भी चुनावी बिगुल बज सकता है। इसी के साथ वर्षों से शांत बैठे नेताओं में अचानक जान आ गई है और टिकट की जंग खुलकर सामने आ गई है।

इस सियासी हलचल का सबसे बड़ा केंद्र बनकर उभरी है-सेंट्रल गुवाहाटी विधानसभा सीट, जो अब पूरी तरह राजनीति का अखाड़ा बन चुकी है। राजनीतिक आंकड़ों पर नजर डालें तो सेंट्रल गुवाहाटी में भाजपा की स्थिति बेहद मजबूत है। क्षेत्र के 13 पार्षद भाजपा से और दो असम गण परिषद से जुड़े हैं। बूथ स्तर तक पार्टी का संगठन सक्रिय है।

यही वजह है कि यह सीट भाजपा के लिए सुरक्षित मानी जाती है। प्रचार, जनसंपर्क और शक्ति प्रदर्शन लगातार तेज होता जा रहा है। भाजपा की ओर से जुरी शर्मा बरदलै, अशोक भराली, विजय कुमार गुप्ता, रत्ना सिंह, प्रमोद स्वामी, राजकुमार तिवाड़ी, राजकुमार शर्मा और गौरव सोमानी जैसे नाम चर्चा में हैं।

वहीं, असम गण परिषद के रमेंद्र नारायण कलिता लगातार इस क्षेत्र से जीत दर्ज करते आए हैं और एक बार फिर दावेदारी ठोक चुके हैं। कांग्रेस से हिंदी भाषी उम्मीदवार रमन झा भी प्रचार में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं।

सत्तारूढ़ भाजपा, उसके सहयोगी असम गण परिषद, कांग्रेस और अन्य दलों ने मैदान में पूरी ताकत झोंक दी है। हर संभावित उम्मीदवार खुद को सबसे मजबूत साबित करने में जुटा रही है। लेकिन इस बार सबसे बड़ा सवाल यह है, क्या भाजपा यह सीट सहयोगी दल को देगी?

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि अगर टिकट गठबंधन के तहत किसी अन्य दल को दिया गया, तो भाजपा का पारंपरिक वोट बैंक भ्रमित हो सकता है। इससे अंदरूनी असंतोष और वोटों के बिखराव का खतरा बढ़ेगा, जिसका सीधा फायदा विपक्ष को मिल सकता है।

जनादेश की सीट या कांटे की टक्कर?

स्थानीय जानकारों का कहना है कि यह सीट अब सिर्फ मुकाबले की नहीं, बल्कि जनादेश की सीट बनती जा रही है। लेकिन साथ ही यह भी सच है कि पूरे क्षेत्र में किसी एक समुदाय का वर्चस्व नहीं है।

यहां अलग-अलग इलाकों में अलग-अलग सामाजिक समीकरण हावी हैं। ऐसे में अगर गलत उम्मीदवार चुना गया, तो मजबूत स्थिति भी कमजोर पड़ सकती है।

हिंदी भाषियों की बढ़ती ताकत बदली सियासी तस्वीर

इस बार चुनाव का सबसे अहम पहलू है-हिंदी भाषी मतदाताओं की संगठित भूमिका।

पहली बार हिंदी भाषी समुदाय ने संगठित होकर अपनी राजनीतिक ताकत दिखाई है। फैंसी बाजार, आठ गांव, कुमारपाड़ा, पलटन बाजार, शांतिपुर, गणेशगुड़ी और बेलतला जैसे क्षेत्रों में हिंदी भाषियों की मजबूत पकड़ है।

हिंदी भाषी विकास परिषद और अन्य सामाजिक संस्थाएं भी अब राजनीतिक दिशा तय करने में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

पूर्व पार्षद सुनीता भीलवाड़िया और सामाजिक कार्यकर्ता रितेश खटेड़ जैसे स्थानीय नेताओं का मानना है कि अब हिंदी भाषी मतदाता केवल वोटर नहीं, बल्कि निर्णायक शक्ति बन चुके हैं।

सत्तारूढ़ भाजपा के लिए अग्निपरीक्षा

सेंट्रल गुवाहाटी सीट इस बार भाजपा और उसके गठबंधन के लिए अग्निपरीक्षा बन चुकी है।

सही उम्मीदवार का चयन, संगठन और गठबंधन में संतुलन, हिंदी भाषी मतदाताओं को साधना, अंदरूनी असंतोष से बचाव-यही चार बड़े फैक्टर इस सीट का भविष्य तय करेंगे।

गलत फैसला भाजपा के लिए नुकसानदेह साबित हो सकता है, जबकि सही रणनीति इस सीट को फिर से सुरक्षित किले में बदल सकती है।

अब सबकी निगाहें टिकट के ऐलान पर टिकी हैं। क्योंकि सेंट्रल गुवाहाटी में यह चुनाव सिर्फ मुकाबला नहीं, सियासी भविष्य की लड़ाई है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

खुद को टटोलें

जाती है-राजनीति के जरिए। वोट बैंक की राजनीति ने समाज को धर्म के आधार पर बांट दिया। कहीं 'अल्पसंख्यक तुष्टिकरण' हुआ, तो कहीं 'बहुसंख्यक ध्रुवीकरण'। दोनों ही स्थितियों में नुकसान आम जनता का हुआ।

रोजगार, शिक्षा, महंगाई जैसे असली सवाल पीछे छूट गए, और आगे आ गए-मंदिर, मस्जिद, नफरत और डर। कुछ मुस्लिम कट्टरपंथी तत्वों की सोच ने सामाजिक सौहार्द को चोट पहुंचाई-यह बात नकारने योग्य नहीं है।

लेकिन इसका जवाब अगर सामूहिक हिंदू कट्टरता बन जाए, तो यह भी उतना ही खतरनाक है। कट्टरता किसी भी धर्म में हो, वह समाज को कमजोर ही करती है। आज जरूरत प्रतिक्रिया की नहीं, विवेक की है।

इस ध्रुवीकरण का सबसे बड़ा नुकसान आम नागरिक को हो रहा है। हिंदू हो या मुसलमान-दोनों बेरोजगारी से परेशान हैं, महंगाई से जूझ रहे हैं, अपने बच्चों के भविष्य को लेकर चिंतित हैं। लेकिन जब समाज बंटता है, तो ये असली समस्याएं दब जाती हैं।

हिंदू समाज का संगठित होना गलत नहीं, मुस्लिम समाज का अपनी पहचान पर गर्व करना भी गलत नहीं। गलत है-एक-दूसरे को दुश्मन समझना।

इतिहास गवाह है-जो देश आपस में लड़ते हैं, वे आगे नहीं बढ़ते। अब समय है कि हम दूसरों पर उंगली उठाने से पहले अपने भीतर झांकें। वरना आने वाली पीढ़ियां हमें माफ नहीं करेंगी।

साप्ताहिक राशिफल

13 से 19 फरवरी 2026 ।। विक्रम संवत 2082-मास : फाल्गुन, पक्ष : कृष्ण- पंचमी ।।

मेष — यह सप्ताह सुखद एवं लाभदायक रहेगा। व्यापार एवं नौकरी में उन्नति होगी। शारीरिक स्थिति बेहतर रहेगी। मित्रों से लाभ मिलेगा, परंतु पारिवारिक मामलों में सावधानी रखें।

वृषभ — **आर्थिक** एवं व्यावसायिक कार्यों में उन्नति के योग हैं। सोच-समझकर निर्णय लें। बच्चों एवं स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। वाणी पर संयम रखें।

मिथुन — **यह** सप्ताह आगे बढ़ने के नए अवसर प्रदान करेगा। कार्यक्षेत्र में पहचान मिलेगी। नौकरी, व्यापार और शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति होगी। बच्चों पर विशेष ध्यान दें।

कर्क — **सप्ताह** की शुरुआत में आय के नए स्रोत मिल सकते हैं। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यापार में लाभ होगा। व्यर्थ खर्च से बचें और योजनाबद्ध तरीके से कार्य करें।

सिंह — **पारिवारिक** सुख एवं सम्मान में वृद्धि होगी। समय का सदुपयोग करें। खान-पान पर ध्यान दें। विद्यार्थियों के लिए यह समय अनुकूल रहेगा।

कन्या — **आर्थिक** स्थिति मजबूत होगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। नौकरी और शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति के योग हैं।

तुला — **दाम्पत्य** जीवन सुखमय रहेगा। घर में खुशहाली बनी रहेगी। सामाजिक कार्यों में भागीदारी बढ़ेगी। मान-सम्मान में वृद्धि होगी।

वृश्चिक — **व्यापार** में वृद्धि के योग हैं। आर्थिक लाभ होगा। वाणी पर संयम रखें। शत्रुओं से सावधान रहें।

धनु — **सभी** दिशाओं से लाभ के योग बन रहे हैं। पारिवारिक सहयोग मिलेगा। जीवन सुखमय रहेगा। स्वास्थ्य पर ध्यान दें।

मकर — **परिश्रम** से सफलता प्राप्त होगी। अपने कार्यों को पूरा करने में सफलता मिलेगी। संयम से कार्य करें।

कुंभ — **घर** में शांति बनी रहेगी। पारिवारिक कार्यों में सम्मान मिलेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आर्थिक उन्नति संभव है।

मीन — **भूमि,** भवन एवं वाहन से संबंधित लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। कार्यों में प्रगति होगी। नौकरी एवं शिक्षा में सफलता मिलेगी।

सप्ताह के पर्व/त्योहार

शुक्रवार, 13 फरवरी
●विजया एकादशी व्रत
शनिवार, 14 फरवरी
शनिप्रदोष व्रत
रविवार, 15 फरवरी
● महाशिवरात्रि व्रत

मंगलवार, 17 फरवरी
●अमावस्या
गुरुवार, 19 फरवरी
●फुलवरिया दूज
●श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती

भाग्योदय
●ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल
भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड
फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

विस चुनाव : 'विकास-प्रदर्शन' की राजनीति

मोरान हाइवे पर इमरजेंसी लैंडिंग, ब्रह्मपुत्र पर नया पुल और आईआईएम का उद्घाटन करेंगे प्रधानमंत्री

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

14 फरवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का असम दौरा केवल औपचारिक उद्घाटनों की श्रृंखला नहीं, बल्कि एक राजनीतिक-संदेश की पटकथा है। पिछले 11 वर्षों में यह उनका 38वां असम दौरा होगा- यह आंकड़ा ही बताता है कि पूर्वोत्तर अब राष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में है।

असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने जिन कार्यक्रमों की रूपरेखा दी है, उसमें तीन स्पष्ट आयाम दिखते हैं-सामरिक शक्ति, अवसंरचना विस्तार और ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था।

मोरान एयर शो: सामरिक आत्मविश्वास का संदेश

मोरान की इमरजेंसी लैंडिंग फैसिलिटी पर डिसॉल्ट राफेल और सुखोई जैसे विमानों का प्रदर्शन केवल तकनीकी अभ्यास नहीं है। यह पूर्वोत्तर में रक्षा तैयारियों और सीमा सुरक्षा के प्रति केंद्र की प्राथमिकता का प्रतीक है। चीन और म्यांमार की सीमाओं के समीप यह शक्ति-प्रदर्शन रणनीतिक संकेत भी देता है।

ब्रह्मपुत्र पर सेतु: विकास का दृश्य प्रतीक

कुमार भास्कर वर्मा सेतु का उद्घाटन गुवाहाटी और नॉर्थ गुवाहाटी को जोड़ते हुए क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को नई दिशा देगा। 15 दिनों तक इसे केवल पैदल यात्रियों के लिए खोलना एक भावनात्मक और जनसंपर्क रणनीति भी है-लोग 'विकास' को करीब से देख और महसूस कर सकें।

यह पुल केवल यातायात का साधन नहीं, बल्कि राजनीतिक विमर्श में विकास का प्रतीक बन सकता है।

शिक्षा और डिजिटल ढांचा: भविष्य की जमीन

आईटी सिटी, बोंगोरा में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट गुवाहाटी के अस्थायी परिसर और अमीनगांव में डेटा सेंटर का उद्घाटन असम को ज्ञान और डिजिटल अर्थव्यवस्था के मानचित्र पर मजबूत करता है। इससे संकेत मिलता है कि राज्य को केवल संसाधन-आधारित अर्थव्यवस्था से आगे बढ़ाकर सेवा और तकनीकी क्षेत्र में भी स्थापित करने की योजना है।

राजनीतिक सार यह है कि असम में 'विकास-राष्ट्रवाद' की कथा को मजबूत किया जा रहा है। एयर शो से राष्ट्रीय सुरक्षा, पुल से बुनियादी ढांचा और आईआईएम से शिक्षा-तीनों मिलकर एक व्यापक संदेश देते हैं कि पूर्वोत्तर अब हाशिए पर नहीं, बल्कि नीति-निर्माण के केंद्र में है।

सवाल यह भी है कि क्या इन परियोजनाओं का लाभ जमीनी स्तर पर रोजगार, व्यापार और आम नागरिक के जीवन में ठोस परिवर्तन लाएगा? आने वाले महीनों में इसका आकलन होगा।

यदि विकास की यह रफ्तार सतत बनी रही और स्थानीय आकांक्षाओं से जुड़ी रही, तो असम की राजनीति में यह निर्णायक मोड़ साबित हो सकता है।

मार्च में फिर आएंगे मोदी- देंगे चाय श्रमिकों को अनमोल तोहफा

असम में 6-7 मार्च को प्रधानमंत्री के संभावित दौरे को लेकर राजनीतिक और सामाजिक हलकों में हलचल तेज हो गई है। मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने संकेत दिया है कि इस दौरान चाय बागान श्रमिकों को भूमि अधिकार (पट्टे) वितरित करना कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण हो सकता है।

मुख्यमंत्री ने लोक सेवा भवन में आयोजित प्रेस वार्ता में कहा कि उनकी इच्छा है कि कम से कम 5,000 चाय श्रमिकों को प्रधानमंत्री के हाथों भूमि पट्टे दिए जाएं। यदि किसी कारणवश प्रधानमंत्री उपस्थित न हो सकें, तो केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा यह वितरण कराया जाएगा। सरकार 10 मार्च से पहले 5,000 से 20,000 श्रमिकों को पट्टे देने की तैयारी में है।

असम को विकास की गति प्रदान करने की खुशी ही अलग है। कठिन परिश्रम से राज्य को विशिष्ट पहचान दिलाने में मिली सफलता से फूले नहीं समा रहे मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा। उनकीइस तस्वीर में उनके शरीर की भाषा तो यही बता रही है।

रोहा में मारवाड़ी पंचायती श्मशान उन्नयन कार्य का शुभारंभ

असमिया और मारवाड़ी समाज का संबंध आत्मीयता से जुड़ा : शशिकांत दास

जन जन विचार
...✍ रोहा

रोहा क्षेत्र में स्थित मारवाड़ी पंचायती श्मशान के उन्नयन कार्य का शुभारंभ स्थानीय विधायक शशिकांत दास ने किया। यह कार्य वर्ष 2024-25 की एमएलएएडीएस योजना के अंतर्गत विधायक निधि से आवंटित 5 लाख रुपए की लागत से संपन्न किया जा रहा है।

शुभारंभ समारोह को संबोधित करते हुए विधायक दास ने कहा कि असमिया समाज और मारवाड़ी समाज का संबंध केवल व्यापारिक नहीं, बल्कि गहरी आत्मीयता और सामाजिक सहभागिता पर आधारित है। उन्होंने मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा के नेतृत्व की सराहना करते हुए कहा कि राज्य सरकार सभी समुदायों के समन्वित विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

विधायक ने असम के सांस्कृतिक पुरोधा ज्योतिप्रसाद आगरवाला के योगदान का स्मरण करते हुए कहा कि असमिया जातीय गठन और समाज व्यवस्था में विभिन्न समुदायों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जिसमें मारवाड़ी समाज भी सदैव सक्रिय भागीदार रहा है।

उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि यदि श्मशान उन्नयन कार्य में अतिरिक्त राशि की आवश्यकता होगी तो और निधि उपलब्ध कराई जाएगी। साथ ही रोहा क्षेत्र में एक 'स्वर्ग रथ' (शव वाहन) की व्यवस्था करने का भी भरोसा दिया।

कार्यक्रम का संचालन रंटु मुदे ने किया। इस अवसर पर रोहा राजस्थानी सार्वजनिक समिति के सचिव मातुराम शर्मा, सह-सचिव संदीप खाटुबाला, कोषाध्यक्ष विष्णु खेतान, सलाहकार महेश कुमार शर्मा, चापरमुख मारवाड़ी समाज के सीताराम अग्रवाला, विकास अग्रवाला, मारवाड़ी पंचायती श्मशान समिति के सचिव विमान सैकिया सहित विभिन्न सामाजिक संगठनों, छात्र संगठनों और राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

युवा लेखिका शर्मिष्ठा प्रीतम को चिकित्सा के लिए सहायता

जन जन विचार
...✍ रोहा

रोहा के फुलोगुड़ी निवासी एवं एसएमए (स्पाइनल मस्कुलर एट्रोफी) से पीड़ित युवा लेखिका शर्मिष्ठा प्रीतम को चिकित्सा सहायता के लिए मुख्यमंत्री की ओर से 5 लाख रुपए का चेक प्रदान किया गया। यह चेक नगांव-बटद्रवा के विधायक रूपक शर्मा और रोहा के विधायक शशिकांत दास ने उनके आवास पर जाकर सौंपा।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

तनावपूर्ण बना दिया।

दीपक का अपराध क्या था?

न हिंसा, न कानून तोड़ना- सिर्फ इंसानियत।

आज वे किराया और कर्ज नहीं चुका पा रहे, बुजुर्ग मां चाय की दुकान चला रही हैं।

सवाल साफ है- अगर किसी को इंसान बनने की सजा मिले, तो वह राष्ट्र मजबूत नहीं, असहिष्णु बनता है।

हिंदू राष्ट्र की असली पहचान डर नहीं, न्याय और संतुलन होनी चाहिए।

वरना कल हर 'दीपक' बुझता चला जाएगा।

संपादकीय

लोकतंत्र की हार

वर्ष 2026 के बजट सत्र में संसद का जो स्वरूप सामने आया, वह भारतीय लोकतंत्र के लिए चिंताजनक संकेत है। राष्ट्रपति के अभिभाषण जैसे गरिमामय अवसर पर हंगामा, अवरोध और अव्यवस्था यह दर्शाते हैं कि अब संसदीय मर्यादाएं राजनीति की भेंट चढ़ती जा रही हैं। विपक्ष का दायित्व सरकार से सवाल करना है, लेकिन सदन को ठप करना लोकतांत्रिक परंपराओं का अपमान है।

राहुल गांधी द्वारा विषय से भटककर पुराने विवादों को उठाना और सत्ता पक्ष द्वारा उसे राजनीतिक हथियार बनाना, दोनों ही लोकतांत्रिक विमर्श को कमजोर करते हैं। संसद बहस का मंच है, न कि टकराव का अखाड़ा। जब बेरोजगारी, महंगाई, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे विषय चर्चा के बजाय शोर में दब जाएं, तो इसका सीधा नुकसान आम नागरिक को होता है। संसद देश की आत्मा है, उसकी गरिमा से ही लोकतंत्र की विश्वसनीयता जुड़ी है।

संसद देश की सर्वोच्च संस्था है, जहां संवाद, समाधान और संतुलन अपेक्षित है। यदि राजनीतिक दल आत्ममंथन नहीं करेंगे, तो लोकतंत्र केवल नारों तक सिमट जाएगा। अब समय आ गया है कि सभी दल सत्ता और विरोध से ऊपर उठकर संसद की गरिमा बहाल करें, वरना इतिहास इन्हें लोकतंत्र का बंधक बनाने वालों के रूप में याद रखेगा।

सुलगता सवाल ? आपके विचार

परीक्षा पे चर्चा

आज के समय में अधिकतर विद्यार्थियों के लिए अच्छे अंक ही सफलता का पैमाना बन गए हैं। घर हो या स्कूल, हर जगह परीक्षा को जीवन का निर्णायक मोड़ माना जाता है। इसी सोच को बदलने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू की गई परीक्षा पे चर्चा ने शिक्षा को तनावमुक्त और सकारात्मक बनाने का संदेश दिया है।

समाज में कम अंक आने पर बच्चों को असफल मान लिया जाता है। इससे उनमें हीन भावना, डर और निराशा पैदा होती है। धीरे-धीरे उनकी सीखने की रुचि कम होने लगती है। जबकि सच यह है कि अंक किसी छात्र की स्थायी क्षमता नहीं बताते, बल्कि उस समय के प्रदर्शन को दर्शाते हैं।

परीक्षा का असली उद्देश्य विद्यार्थियों को अपनी कमजोरियों को समझने और सुधार करने का अवसर देना है। कम अंक यह संकेत देते हैं कि कहां अधिक मेहनत और सही दिशा की आवश्यकता है। यदि इन्हें सीखने के साधन के रूप में देखा जाए, तो यही असफलता भविष्य की सफलता की नींव बन सकती है।

शिक्षकों और अभिभावकों की भूमिका इसमें बेहद महत्वपूर्ण है। बच्चों की तुलना करने या डांटने के बजाय उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। गलतियों को समझाकर सही मार्गदर्शन देना उनके आत्मविश्वास को मजबूत करता है।

परीक्षा पे चर्चा ने यह स्पष्ट किया है कि शिक्षा केवल अंकों की दौड़ नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया है। जब हम परीक्षा को सीखने का माध्यम बनाएंगे, तब हमारे बच्चे आत्मनिर्भर, साहसी और आत्मविश्वासी बनेंगे।

अखाड़ा बनी संसद

जन जन विचार
...✍ योगेंद्र योगी

देश में मौजूद गंभीर मुद्दों पर चर्चा और उनके समाधान के प्रयासों के बजाए निहित राजनीतिक स्वार्थों के लिए संसद में दलगत राजनीति भारी पड़ रही है। संसद सत्तारुढ़ और विपक्ष के लिए अखाड़ा बनी हुई है। देश के कर्णधारों को देश की बिगड़ती दिशा-दशा की कोई परवाह नहीं है। दिल्ली अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) और अन्य शोधों के अनुसार, वायु प्रदूषण न केवल श्वसन प्रणाली, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य को भी गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है। जहरीली हवा के लंबे समय तक संपर्क में रहने से तनाव, चिंता, अवसाद (डिप्रेशन), संज्ञानात्मक हानि और बच्चों में एडीएचडी जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं, जिसे विशेषज्ञ एक 'मानसिक स्वास्थ्य आपातकाल' मान रहे हैं।

एरोसोल सूक्ष्म कणों पीएम 2.5 और जहरीली गैसों से दिमागी सूजन और ऑक्सीडेटिव तनाव होता है, जो अवसाद और चिड़चिड़ापन पैदा करता है। प्रदूषण के कारण वयस्कों में भावनात्मक थकान, निर्णय लेने की क्षमता में कमी और बच्चों में सीखने में कठिनाई देखी जा रही है। लंबे समय तक प्रदूषित हवा में रहने से अल्जाइमर और पार्किंसंस जैसे तंत्रिका अपक्षयी विकारों का खतरा बढ़ जाता है। अध्ययन बताते हैं कि पीएम 2.5 के एरोसोल घटक, डिप्रेशन और चिंता से सीधे जुड़े हैं। एम्स की एक अन्य रिसर्च में स्पीच एनालिसिस तकनीक के जरिए डिप्रेशन की पहचान की जा रही है, जो बताता है कि मानसिक स्वास्थ्य पर प्रदूषण का असर कितना गहरा है। विशेषज्ञों के अनुसार, स्मॉग के दौरान बाहर निकलने से बचें, मास्क का उपयोग करें, घर में एयर प्यूरीफायर लगाएं और तनाव कम करने के लिए योग व स्वस्थ जीवनशैली अपनाएं।

> **विश्व रैंकिंग में भारत का स्थान और घरेलू आतंरिक चुनौतियों पर चर्चा और इनके समाधान के बजाए सबसे बड़ा लोकतांत्रिक मंच संसद तमाशा बनी हुई है। सांसद देश की वास्तविक समस्याओं पर चर्चा करने के बजाए गरिमा को तार-तार करने में लगे हुए हैं।**

इसी तरह इंडियन साइकियाट्रिक सोसायटी की 77वीं वार्षिक राष्ट्रीय कांफ्रेंस में विशेषज्ञों ने बताया कि आज भारत में करीब 60 प्रतिशत मानसिक रोग 35 साल से कम उम्र के लोगों में पाए जा रहे हैं। यह आंकड़ा इसलिए चिंताजनक है क्योंकि यही उम्र पढ़ाई पूरी करने, करियर बनाने और समाज में सक्रिय भूमिका निभाने की होती है। अगर इसी समय मानसिक समस्याएं शुरू हो जाएं और उनका इलाज न हो, तो इसका असर पूरी जिंदगी पर पड़ सकता है। कांफ्रेंस में यह भी बताया गया कि कोविड-19 महामारी, आर्थिक अस्थिरता और बदलती सामाजिक संरचना ने युवाओं के तनाव को और बढ़ा दिया है। महामारी के बाद पढ़ाई, नौकरी और भविष्य को लेकर अनिश्चितता ने चिंता और डिप्रेशन के मामलों में इजाफा किया है।

जिम्मेदार राष्ट्र सूचकांक-2026 में सिंगापुर पहले स्थान पर काबिज है, वहीं भारत 16वें नंबर पर है। रिपोर्ट में यह आंका गया है कि कोई देश अपने लोगों और पूरी दुनिया के लिए कितना जिम्मेदार है। इस सूची में सिंगापुर को दुनिया का सबसे जिम्मेदार देश घोषित किया गया है। सिंगापुर ने शासन, समाज और पर्यावरण के क्षेत्र में बेहतर काम करके पहला स्थान हासिल किया है। इसी तरह साल 2026 के ग्लोबल सॉफ्ट पावर इंडेक्स में भारत 48.0 के स्कोर के साथ इस फेहरिस्त में 32वें स्थान पर है। यह पिछले साल के मुकाबले दो स्थान नीचे और 1.8 अंक कम है। सॉफ्ट पावर किसी देश की उस क्षमता को कहते हैं, जिसमें वह सैन्य बल के बजाय अपनी संस्कृति और मूल्यों से दूसरे देशों को प्रभावित करता है।

विश्व रैंकिंग में भारत का स्थान और घरेलू आतंरिक चुनौतियों पर चर्चा और इनके समाधान के बजाए सबसे बड़ा लोकतांत्रिक मंच संसद तमाशा बनी हुई है। सांसद देश की वास्तविक समस्याओं पर चर्चा करने के बजाए गरिमा को तार-तार करने में लगे हुए हैं। संसद के मौजूदा सत्र में लोकसभा में भारी हंगामे के दौरान कुछ सांसदों ने स्पीकर के आसन की ओर कागज फेंके, जिसके बाद उन्हें सत्र की बाकी अवधि के लिए निलंबित कर दिया गया। यह कार्रवाई संसदीय कार्य मंत्री के प्रस्ताव पर हुई, जिसे सदन ने मंजूर कर लिया। दरअसल, राहुल गांधी को बोलने से रोके जाने

पर विपक्षी दल भड़क गए थे और हंगामा शुरू कर दिया था। इस मामले में कुल आठ सांसदों पर कार्रवाई हुई और उन्हें निलंबित कर दिया गया।

लोकसभा में प्रधानमंत्री मोदी का अभिभाषण होना था, उनको धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा का जवाब देना था। इसके लिए प्रधानमंत्री मोदी लोकसभा में पहुंच भी चुके थे। लेकिन उनका अभिभाषण शुरू होने से पहले ही सदन की कार्यवाही स्थगित कर दी गई। विपक्ष के हंगामे की वजह से सदन की कार्यवाही स्थगित की गई। भारत-यूएस ट्रेड डील पर केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने सरकार का पक्ष रखना शुरू किया था, तो विपक्षी सांसदों ने हंगामा शुरू कर दिया था। पीयूष गोयल ने इस दौरान कहा कि भारत और अमेरिका के बीच हुई ट्रेड डील पर कहा कि इसमें किसानों के हितों को सुरक्षित रक्षा गया है। इससे पहले राहुल गांधी फिर संसद में पूर्व आर्मी चीफ नरवणे की वो किताब लेकर पहुंचे। लोकसभा में लगातार हंगामा होता रहा।

यही वजह है देश के युवा और उद्यमियों का लगातार भारत से मोह भंग हो रहा है। पिछले साल 2024 में भारत के दो लाख से भी ज्यादा अमीर लोगों ने भारतीय नागरिकता छोड़ दी। भारत छोड़कर विदेशों में बसने का चलन साल दर साल लगातार बढ़ रहा है। आंकड़े बताते हैं कि देश के लोगों को भारत की लाइफस्टाइल और यहां की आबो-हवा पसंद नहीं आ रही है, लेकिन उनको विदेशी धरती की लाइफस्टाइल ज्यादा लुभावनी और सुरक्षित लग रही है। साल 2024 में 2 लाख 6 हजार लोगों ने भारत की नागरिकता छोड़ दी। साल 2023 में 2 लाख 16 हजार 219 लोगों ने भारत की नागरिकता छोड़ दी थी। विशेषज्ञों का मानना है कि शिक्षा और नौकरियों के सीमित अवसर, सामाजिक असमानता और राजनीतिक माहौल लोगों को देश छोड़ने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। देश के बजाए निहित राजनीतिक हितों को प्राथमिकता देने से समस्याओं का अंबार कम होने का नाम नहीं ले रहा है। इससे पहले कि हालात बेकाबू हों देश के कर्णधार जिम्मेदारी का एहसास करें और समस्याओं के निदान में गंभीरता दिखाएं।

जन गण मन से पहले 3.10 मिनट तक बजेगा राष्ट्रगीत

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम' को लेकर केंद्र सरकार ने नए दिशा-निर्देश जारी किए हैं। ऐसे में अब राष्ट्र गान 'जन गण मन' से पहले राट्रगीत 'वंदे मातरम' बजेगा। गृह मंत्रालय की ओर से जारी आदेश के अनुसार सरकार ने आधिकारिक मौकों पर 'वंदे मातरम' के छह अंतरा वाले संस्करण को बजाना या गायन अनिवार्य किया है। जिसकी कुल अवधि 3. 10 मिनट होगी। राष्ट्रगीत के सभी छह छंद बजाए जाएंगे, जिनमें वे चार छंद भी शामिल हैं, जिन्हें कांग्रेस ने 1937 में हटा दिया था।

नए दिशानिर्देशों के अनुसार यह नियम राष्ट्रीय ध्वज फहराने, कार्यक्रमों में राष्ट्रपति के आगमन, उनके भाषणों या राट्र के नाम संबोधन से पहले और बाद में अनिवार्य तौर पर लागू किया गया है। इसी के साथ सरकारी कार्यक्रमों, सरकारी स्कूलों के आयोजन या अन्य औपचारिक आयोजनों में 'वंदे मातरम' बजाया या गाया जाएगा।

नई गाइडलाइन के मुताबिक वंदे मातरम का पूरा आधिकारिक संस्करण, जिसमें छह लाइनें हैं और जो लगभग 3 मिनट 10 सेकेंड का है, बड़े सरकारी मौकों पर गाया या बजाया जाएगा। निर्देश का एक खास पहलू यह है कि जब भी किसी कार्यक्रम में वंदे मातरम और राष्ट्रगान दोनों हों, तो राष्ट्गान से पहले राष्ट्रगीत गाया जाना चाहिए।

गाइडलाइंस में आगे बताया गया है कि इस दौरान सम्मान में हर व्यक्ति का खड़ा होना अनिवार्य होगा। इसी के साथ गृह मंत्रालय ने शैक्षणिक संस्थानों से यह भी कहा है कि वे रोजाना स्कूल में प्रार्थना या जरूरी शैक्षणिक कार्यक्रम में 'वंदे मातरम' गीत को बढ़ावा दें। इस कदम का मकसद छात्रों और आम लोगों में राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति जागरूकता और सम्मान को बढ़ावा देना है।

हालांकि नए नियमों में सिनेमा हॉल को इससे दूर रखा गया है। जिसका मतलब है कि फिल्म शुरू होने से पहले सिनेमाघरों में 'वंदे मातरम' बजाना और खड़ा रहना जरूरी नहीं होगा।

नरवणे पुस्तक पर सियासी संग्राम

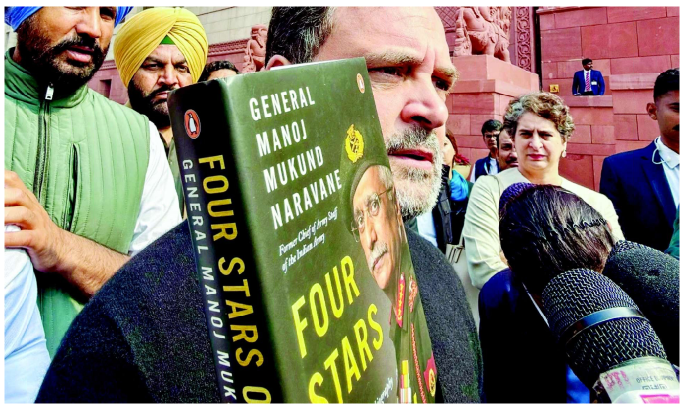

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

पूर्व थलसेना प्रमुख मनोज मुकुंद नरवणे की अप्रकाशित पुस्तक को लेकर राजनीतिक विवाद गहराता जा रहा है। भारतीय जनता पार्टी ने लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर एक सम्मानित सेना अधिकारी को राजनीति में घसीटने और संसद में भ्रामक दावा करने का आरोप लगाया है।

भाजपा ने कहा कि जनरल नरवणे तथा प्रकाशक ने स्पष्ट किया है कि संबंधित पुस्तक अभी प्रकाशित नहीं हुई है। इसके बावजूद राहुल गांधी ने संसद में पुस्तक के अंशों का हवाला दिया। पार्टी का आरोप है कि इससे न केवल संसद की गरिमा प्रभावित हुई, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे संवेदनशील विषय को भी अनावश्यक विवाद में घसीटा गया।

विवाद तब शुरू हुआ जब राहुल गांधी ने संसद में दावा किया कि पुस्तक उपलब्ध है और इसके समर्थन में 2023 की एक सोशल मीडिया पोस्ट का उल्लेख किया। लोकसभा अध्यक्ष ने विपक्ष के नेता को अप्रकाशित सामग्री का हवाला देने से परहेज करने का निर्देश भी दिया।

राहुल ने कहा कि यदि प्रकाशक का दावा सही है तो फिर पूर्व सेना प्रमुख की सोशल मीडिया पोस्ट पर प्रश्न उठता है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि पुस्तक में कुछ ऐसे उल्लेख हैं जो केंद्र सरकार के लिए असुविधाजनक हो सकते हैं।

'ग्लोबल लीक' एफआईआर दर्ज

नई दिल्ली। पूर्व थलसेना प्रमुख मनोज मुकुंद नरवने की संस्मरण पुस्तक 'फोर स्टार्स ऑफ डेस्टिनी' कथित रूप से आधिकारिक मंजूरी से पहले वैश्विक डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध होने के आरोपों के बाद विवादों में घिर गई है। मामले में दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने आपराधिक साजिश सहित विभिन्न धाराओं में एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

प्रारंभिक जांच में संकेत मिले हैं कि यह केवल साधारण पायरेसी नहीं, बल्कि एक 'संगठित और समन्वित' लीक हो सकता है। जांच एजेंसियां अमेरिका, कनाडा, जर्मनी और ऑस्ट्रेलिया में डिजिटल व वित्तीय ट्रेल खंगाल रही हैं, जहां कथित तौर पर पुस्तक की ऑनलाइन लिस्टिंग पाई गई।

देश में लापता बच्चों पर सुप्रीम कोर्ट सख्त

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

देश में लगातार बढ़ रहे बच्चों के लापता होने के मामलों को गंभीर मानते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार को कड़ी फटकार लगाई है। अदालत ने पूछा है कि क्या इसके पीछे कोई संगठित गिरोह काम कर रहा है या फिर ये घटनाएं अलग-अलग हैं।

न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना और न्यायमूर्ति उज्जल भुइयां की पीठ ने सभी राज्यों से बच्चों के लापता होने से जुड़ा पूरा विवरण एकत्र करने और उसका विश्लेषण करने का आदेश दिया है।

अदालत ने कहा कि जिन बच्चों को अपहरण के बाद सुरक्षित बरामद किया गया है, उनसे बातचीत की जाए, ताकि अपराध का तरीका, शामिल लोगों की पहचान, और गिरोह की संरचना का पता लगाया जा सके। इससे पहले भी अदालत ने सरकार को पिछले छह वर्षों में लापता हुए बच्चों का पूरा विवरण सार्वजनिक करने का आदेश दिया था।

एक रिपोर्ट के अनुसार, देश में हर आठ मिनट में एक बच्चा लापता हो जाता है, जिसे अदालत ने अत्यंत चिंताजनक बताया है। सर्वोच्च न्यायालय की सख्ती से स्पष्ट है कि अब बच्चों की सुरक्षा को लेकर कोई ढिलाई नहीं चलेगी। सरकार को अब दोषियों की पहचान, गिरोहों का भंडाफोड़ और मजबूत सुरक्षा व्यवस्था तैयार करनी होगी।

राज्यों से जानकारी जुटाने को कहा

सुनवाई के दौरान सरकार की ओर से बताया गया कि कुछ राज्यों ने जानकारी भेज दी है, लेकिन कई राज्यों से अब तक कोई विवरण नहीं मिला है। इस पर अदालत ने नाराजगी जताते हुए कहा कि बिना पूरी जानकारी के सच्चाई सामने नहीं आ सकती।

जो राज्य अब तक जानकारी नहीं भेज रहे हैं, उन पर अदालत ने नाराजगी जताई है। न्यायालय ने संकेत दिया है कि आवश्यकता पड़ी तो कठोर आदेश जारी किए जाएंगे।

मेघालय में फिर मौत की खदान सरकार मौन, 27 मजदूरों मरे

जन जन विचार
...✍ शिलांग

मेघालय के ईस्ट जयंतीया हिल्स डिस्ट्रिक्ट में अवैध रैट-होल कोयला खदान में हुए भीषण विस्फोट ने एक बार फिर देश को झकझोर दिया है। 5 फरवरी की सुबह हुए इस हादसे में 25 से 27 मजदूरों की मौत की पुष्टि हो चुकी है, जबकि 9 से अधिक लोग घायल बताए जा रहे हैं।

हादसे के कई दिन बाद भी राहत और बचाव कार्य पूरी तरह समाप्त नहीं हो पाया है। खराब जमीन, जहरीली गैस और बेहद संकरी सुरंगों के कारण बचाव दल को भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि विस्फोट डायनामाइट के अवैध प्रयोग से हुआ। रैट-होल खदानें बिना किसी तकनीकी मानक, सुरक्षा उपकरण और वेंटिलेशन के चलाई जाती हैं, जिससे ऐसे हादसे लगभग तय हो जाते हैं।

हादसे के बाद दो खदान मालिकों को गिरफ्तार किया गया है। प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है और राज्य सरकार व उच्च न्यायालय स्तर पर जांच शुरू हो चुकी है। हालांकि सवाल यह है जब 2014 से रैट-होल खनन पर प्रतिबंध है, तो यह अवैध धंधा खुलेआम कैसे चल रहा था?

हुमायूं कबीर की खुली चुनौती, योगी के बयान से बढ़ा टकराव

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली/कोलकाता

बाबरी मस्जिद विवाद एक बार फिर देश की राजनीति के केंद्र में आ गया है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के बयान के बाद पश्चिम बंगाल में जनता उन्नयन पार्टी के प्रमुख हुमायूं कबीर ने खुला एलान कर दिया, 'रोक सको तो रोक लो, मुर्शिदाबाद में बाबरी मस्जिद बनाऊंगा।'

इस बयान ने न सिर्फ राजनीतिक हलकों में हलचल मचा दी है, बल्कि सामाजिक सौहार्द और कानून-व्यवस्था को लेकर भी गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

बाबरी पर बवाल

बाराबंकी की जनसभा में योगी आदित्यनाथ ने कहा था कि बाबरी मस्जिद का पुनर्निर्माण 'कयामत तक नहीं होगा' और राम मंदिर सनातन धर्म की ताकत का प्रतीक है। इस बयान को कई राजनीतिक दलों ने भड़काऊ करार दिया, जबकि समर्थकों ने इसे आस्था और प्रतिबद्धता का प्रतीक बताया।

योगी के बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए हुमायूं कबीर ने कहा, 'यह बंगाल है, यूपी नहीं। संविधान मुझे मस्जिद बनाने का अधिकार देता है। मैं मुर्शिदाबाद में बाबरी मस्जिद बनाकर रहूंगा।'

वीर बालक से महान राजा तक

छत्रपति शिवाजी

छत्रपति शिवाजी महाराज भारत के महान वीर और कुशल शासक थे। वे बचपन से ही बहादुर, सच्चे और देशप्रेमी थे। उन्होंने अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई और अपने साहस से एक मजबूत राज्य बनाया।

शिवाजी बचपन में किलों, पहाड़ों और जंगलों में खेलते थे। उनकी मां जिजाबाई उन्हें रामायण-महाभारत की कहानियां सुनाती थीं। इन्हीं कहानियों से उन्हें सच्चाई, साहस और धर्म का रास्ता मिला।

शिवाजी महाराज को किलों से बहुत प्रेम था। उन्होंने कई मजबूत किले बनवाए और उनकी रक्षा की।

उनकी सेना तेज, समझदार और अनुशासित थी।

शिवाजी सिर्फ ताकतवर ही नहीं, बहुत बुद्धिमान भी थे। वे बिना बेवजह लड़ाई किए, अपनी चतुराई से दुश्मन को हराते थे।

वे हमेशा जनता की सुरक्षा को सबसे ऊपर रखते थे।

शिवाजी महाराज सभी धर्मों और लोगों का सम्मान करते थे। वे कहते थे, 'राजा वही है, जो प्रजा की सेवा करे।'

उन्होंने बहुत कम उम्र में अपना राज्य बनाया। उनकी नौसेना भी बहुत शक्तिशाली थी। वे सैनिकों को भाई जैसा मानते थे।

शिवाजी महाराज हमें सिखाते हैं कि अगर मन में सच्चाई और हिम्मत हो, तो कोई भी सपना पूरा किया जा सकता है।

'अगर दिल में साहस है, तो तुम भी शिवाजी बन सकते हो!'

आओ जानें

हमारी आकाशगंगा

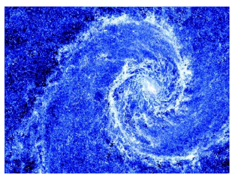

हम जिस आकाशगंगा में रहते हैं उसे आकाशगंगा (Milky Way) कहा जाता है। इसमें लगभग 100-400 अरब तारे हैं, और हमारा सूर्य भी उन्हीं में से एक है।

मानव मस्तिष्क की शक्ति

मानव मस्तिष्क में लगभग 86 अरब न्यूरॉन्स होते हैं। यह इतना जटिल है कि वैज्ञानिक आज भी इसकी पूरी क्षमता को समझने में लगे हैं।

बिजली का तापमान

आकाशीय बिजली का तापमान लगभग 30,000 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकता है - जो सूर्य की सतह से भी अधिक गरम होता है!

शनि ग्रह के छल्ले

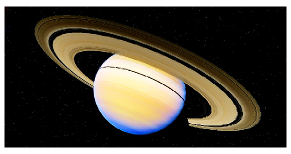

शनि ग्रह अपने सुंदर छल्लों के लिए प्रसिद्ध है। ये छल्ले बर्फ और पत्थरों के असंख्य टुकड़ों से बने हैं।

ऑक्टोपस के तीन दिल

ऑक्टोपस के तीन हृदय होते हैं! दो हृदय गलफड़ों को रक्त पहुंचाते हैं और एक पूरे शरीर में।

ऑक्टोपस की 8 भुजाएं होती हैं।

इसका खून नीले रंग का होता है (तांबे वाले हीमोसाइनिन के कारण)।

यह बहुत बुद्धिमान समुद्री जीवों में गिना जाता है।

ऑक्टोपस अपने शरीर का रंग और बनावट बदल सकता है। इससे वह दुश्मनों से छिप जाता है।

ऑक्टोपस की हड्डियां नहीं होतीं, इसलिए यह बहुत छोटे छेद से भी निकल सकता है।

इसका जीवनकाल सामान्यत: 1-5 वर्ष होता है।

आओ रंग-बिरंगी तितली बनाएं-

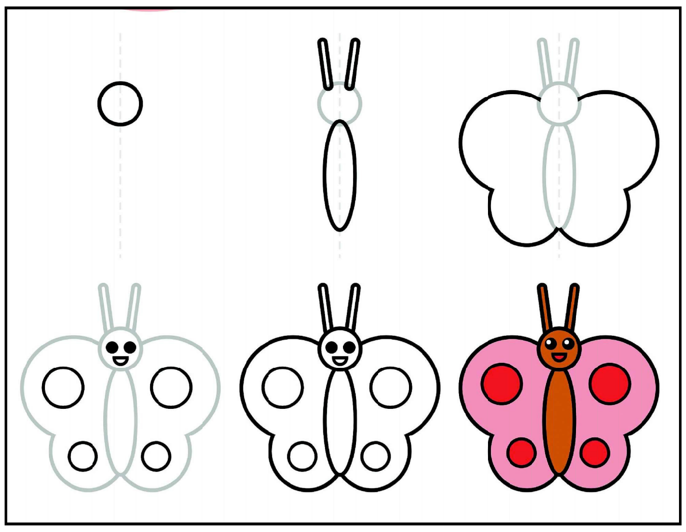

विचार

अच्छी आदतें ही उज्ज्वल भविष्य की नींव होती हैं।

अच्छी आदतें

सुबह जल्दी उठना

जल्दी उठने से दिन की शुरुआत ताजगी और ऊर्जा से होती है। पढ़ाई और खेल-दोनों के लिए समय मिलता है।

रोज पढ़ने की आदत

हर दिन कम से कम 20-30 मिनट पुस्तक पढ़ने से ज्ञान बढ़ता है और भाषा सुधरती है।

बड़ों का सम्मान

माता-पिता, शिक्षक और बुजुर्गों का आदर करना अच्छे संस्कार की निशानी है।

स्वच्छता बनाए रखना

रोज नहाना, दांत साफ करना और अपने आस-पास सफाई रखना हमें स्वस्थ रखता है।

'धन्यवाद' और 'कृपया' कहना

मीठी वाणी और विनम्र व्यवहार से सबका दिल जीता जा सकता है।

घमंडी हाथी और छोटी चिड़िया

एक विशाल जंगल में एक घमंडी हाथी रहता था। वह अपनी ताकत पर बहुत इतराता था।

एक दिन चलते-चलते उसने पेड़ की वह डाल तोड़ दी, जिस पर एक छोटी चिड़िया का घोंसला था। घोंसले में उसके अंडे थे, जो नीचे गिरकर टूट गए।

चिड़िया दुखी हुई, पर उसने हार नहीं मानी। उसने अपने मित्रों -एक कठफोड़वा, एक मेंढक और एक मधुमक्खी- से सहायता मांगी।

सबने मिलकर योजना बनाई।

मधुमक्खी ने हाथी के कानों के पास भिनभिनाकर उसे परेशान किया।

कठफोड़वा ने उसकी आंखों पर चोंच मारी।

अंधा हुआ हाथी घबराकर इधर-उधर भागने लगा।

उसी समय मेंढक गहरे गड्ढे के पास टर्राने लगा।

हाथी ने सोचा कि वहां पानी है और वह उसी दिशा में दौड़ा और गड्ढे में गिर पड़ा।

इस प्रकार छोटी चिड़िया और उसके मित्रों ने मिलकर शक्तिशाली हाथी को पराजित कर दिया।

सीख : एकता में अपार शक्ति होती है।
छोटे-छोटे प्रयास मिलकर बड़े से बड़े अहंकार को झुका सकते हैं।
अहंकार अंतत: विनाश का कारण बनता है।

लोसर : जब पहाड़ों में खिल उठता है नया साल

जन जन विचार

सर्द हवाओं के बीच, बर्फ से ढकी पहाड़ियों पर जब रंग-बिरंगे झंडे लहराने लगते हैं, जब मठों में मंत्रों की गूंज सुनाई देती है और घरों में खुशियों की रौनक फैल जाती है-तब समझ लिया जाता है कि लोसर आ गया है। यह केवल नया साल नहीं, बल्कि आशा, आस्था और संस्कृति का उत्सव है।

लोसर पर्व मुख्य रूप से बौद्ध समुदाय द्वारा लद्दाख, सिक्किम, भूटान और तिब्बत स्वशासी क्षेत्र में बड़े श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है। यह पर्व आमतौर पर फरवरी या मार्च में आता है और नई शुरुआत का संदेश देता है।

नई सुबह, नया संकल्प

'लो' का अर्थ है वर्ष और 'सर' का मतलब नया-अर्थात नया साल।

लेकिन लोसर केवल कैलेंडर बदलने का दिन नहीं है। यह मन और जीवन को नए सिरे से सजाने का अवसर है। इस पर्व से पहले लोग अपने घरों की सफाई करते हैं, पुराने विवाद भुलाते हैं और नए रिश्तों की शुरुआत करते हैं।

माना जाता है कि जैसे घर की गंदगी हटाई जाती है, वैसे ही मन की नकारात्मकता भी इस समय छोड़ देनी चाहिए।

मठों से उठती शांति की आवाज

लोसर के दिन सुबह से ही मठों में विशेष प्रार्थनाएं होती हैं। भिक्षु मंत्रोच्चारण करते हैं, दीप जलाए जाते हैं और शांति की कामना की जाती है। चारों ओर 'बुद्धं शरणं गच्छामि' की गूंज वातावरण को पवित्र बना देती है।

यह समय आत्मचिंतन और साधना का भी होता है-जब लोग अपने भीतर झांकने का प्रयास करते हैं।

रंग, नृत्य और परंपरा

लोसर की सबसे आकर्षक झलक पारंपरिक नृत्यों में दिखाई देती है। खासकर भूटान और लद्दाख में होने वाला मुखौटा नृत्य (मास्क डांस) लोगों को खूब आकर्षित करता है। रंगीन पोशाकें, ढोल-नगाड़ों की धुन और कलाकारों की ऊर्जा पर्व में जान डाल देती है। ये नृत्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि धार्मिक कथाओं और नैतिक संदेशों का प्रतीक होते हैं।

स्वाद में भी संस्कृति

लोसर पर विशेष व्यंजन बनाए जाते हैं, जिनमें प्रमुख हैं- थुकपा, गुंथुक, खपसे पारंपरिक मिठाइयां।

परिवार और पड़ोसी एक-दूसरे के घर जाकर भोजन करते हैं। यह मेल-जोल और भाईचारे को मजबूत करता है।

रिश्तों का उत्सव

लोसर का एक सुंदर पहलू है-आपसी प्रेम और सम्मान। लोग एक-दूसरे को 'हैप्पी लोसर' कहकर शुभकामनाएं देते हैं। बुजुर्गों से आशीर्वाद लिया जाता है और बच्चों को उपहार दिए जाते हैं।

यह पर्व पीढ़ियों को जोड़ने का भी काम करता है।

आधुनिक समय में लोसर का संदेश

आज के तनावपूर्ण जीवन में लोसर हमें रुककर सांस लेने का मौका देता है। यह सिखाता है कि

शांति सबसे बड़ी संपत्ति है

सादगी में भी खुशी मिलती है

परंपरा और प्रकृति का सम्मान जरूरी है

डिजिटल युग में भी यह पर्व अपनी सांस्कृतिक पहचान को जीवित रखे हुए है।

आशा और उजाले का पर्व

लोसर हमें यह याद दिलाता है कि हर साल, हर सुबह और हर पल एक नई शुरुआत हो सकता है। बीती गलतियों से सीख लेकर आगे बढ़ना ही इसका असली संदेश है।

बर्फीले पहाड़ों से लेकर छोटे गांवों तक, लोसर का उजाला लोगों के दिलों को जोड़ता है और जीवन में नई ऊर्जा भर देता है।

लोसर केवल एक पर्व नहीं, बल्कि जीवन को सकारात्मक दिशा देने की प्रेरणा है। यह हमें सिखाता है कि आस्था, संस्कृति और मानवता के साथ चलकर ही सच्ची खुशी पाई जा सकती है।

कैलेंडर : समय की संस्कृति, विज्ञान और सभ्यता की कहानी

जन जन विचार

समय को मापने और व्यवस्थित करने का मानव प्रयास ही कैलेंडर है। यह केवल तिथियों का पन्ना नहीं, बल्कि सभ्यता, संस्कृति, खगोल विज्ञान और इतिहास का दस्तावेज है।

कैलेंडर की उत्पत्ति

प्राचीन मिस्र, रोमन और भारतीय सभ्यताओं ने सूर्य और चंद्रमा की गति के आधार पर समय की गणना शुरू की। रोमन साम्राज्य ने प्रारंभिक सौर कैलेंडर विकसित किया। भारत में वैदिक काल से पंचांग परंपरा प्रचलित रही।

ग्रेगोरियन कैलेंडर

आज दुनिया में सबसे अधिक प्रचलित ग्रेगोरियन कैलेंडर है, जिसे 1582 में पोप ग्रेगरी तेरहवें ने लागू किया। इसमें 365 दिन और हर चार वर्ष बाद लीप वर्ष का प्रावधान है।

सौर कैलेंडर : सूर्य की गति पर आधारित (जैसे ग्रेगोरियन)।

चंद्र कैलेंडर : चंद्रमा की कलाओं पर आधारित (जैसे इस्लामी हिजरी)।

चंद्र-सौर कैलेंडर : दोनों का समन्वय (जैसे भारतीय पंचांग)।

भारत का राष्ट्रीय कैलेंडर : शक संवत

भारत सरकार ने 1957 में शक संवत को राष्ट्रीय कैलेंडर के रूप में स्वीकार किया। इसका पहला महीना चैत्र है। यह ग्रेगोरियन कैलेंडर के साथ समानांतर चलता है।

शक संवत की गणना 78 ईस्वी से आरंभ मानी जाती है। माना जाता है कि यह शक शासकों के काल से संबंधित है। स्वतंत्रता के बाद विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग पंचांग प्रचलित होने के कारण तिथियों में भ्रम होता था। इसलिए 1952 में कैलेंडर सुधार समिति का गठन किया गया, जिसकी सिफारिश पर 1957 में इसे लागू किया गया।

इसके अतिरिक्त विक्रम संवत भी व्यापक रूप से धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यों में उपयोग होता है, जिसकी शुरुआत 57 ईसा पूर्व मानी जाती है।

कैलेंडर त्योहारों, कृषि, शिक्षा, प्रशासन और आर्थिक गतिविधियों की योजना तय करता है।

भारत में दीपावली, ईद, क्रिसमस, बैसाखी, बिहू जैसे पर्व अलग-अलग कैलेंडर परंपराओं से जुड़े हैं।

खगोल विज्ञान की प्रगति के साथ कैलेंडर अधिक सटीक होते गए। पृथ्वी की परिक्रमा, अक्षीय झुकाव और चंद्रमा की गति को समझने से तिथियों की त्रुटियां सुधारी गईं।

कैलेंडर का विकास

3000 ईसा पूर्व

प्राचीन मिस्र में सूर्य आधारित कैलेंडर का विकास।
365 दिनों का वर्ष निर्धारित।

45 ईसा पूर्व

जूलियस सीजर ने जूलियन कैलेंडर लागू किया।
लीप वर्ष की अवधारणा जोड़ी गई।

57 ईसा पूर्व

विक्रम संवत की शुरुआत मानी जाती है।
भारत में धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यों में प्रचलित।

1582 ईस्वी

ग्रेगोरियन कैलेंडर लागू।
पोप ग्रेगरी तेरहवें द्वारा जूलियन कैलेंडर में सुधार।

1957 ईस्वी

भारत ने शक संवत को राष्ट्रीय कैलेंडर के रूप में अपनाया।
प्रशासनिक कार्यों में आधिकारिक उपयोग।

सरोजिनी नायडू : काव्य और कर्म की अमर वीरांगना

जन जन विचार

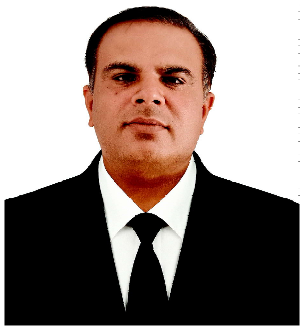

...✍ डॉ. मुकेश कुमार
हिंदी विभाग,
चौधरी रणबीर सिंह
यूनिवर्सिटी जींद (हरियाणा)

सरोजिनी नायडू भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की अग्रणी सेनानी, ओजस्वी वक्ता और विलक्षण प्रतिभा की धनी कवयित्री थीं। उन्हें 'भारत कोकिला' के नाम से सम्मानित किया गया, क्योंकि उनकी वाणी में अद्भुत मधुरता और काव्य में संगीतात्मक लय थी। वे भारतीय नारी शक्ति, राष्ट्रप्रेम और सांस्कृतिक चेतना की सशक्त प्रतीक थीं। उनका जीवन साहित्य, राजनीति और समाज सेवा का सुंदर समन्वय प्रस्तुत करता है।

उनका जन्म 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में हुआ। उनके पिता डॉ. अघोरनाथ चट्टोपाध्याय एक प्रतिष्ठित वैज्ञानिक और शिक्षाविद् थे तथा माता वरदा सुंदरी देवी एक संवेदनशील कवयित्री थीं। घर का वातावरण विद्वतापूर्ण और साहित्यिक था, जिससे उनके व्यक्तित्व का निर्माण हुआ। वे बचपन से ही अत्यंत मेधावी थीं। बारह वर्ष की आयु में उन्होंने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। किशोरावस्था में ही उनकी काव्य प्रतिभा प्रकट होने लगी। तेरह वर्ष की आयु में उन्होंने लंबी अंग्रेजी कविता लिखी, जिससे प्रभावित होकर हैदराबाद के निजाम ने उन्हें उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की। वे इंग्लैंड के किंग्स कॉलेज, लंदन और बाद में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के गर्टन कॉलेज में अध्ययन हेतु गईं। विदेश में रहते हुए भी उनका मन भारतीय संस्कृति और प्रकृति से जुड़ा रहा।

भारत लौटने के पश्चात उन्होंने डॉ. गोविंदराजुलु नायडू से विवाह किया। यह अंतर्जातीय विवाह था, जो उस समय सामाजिक दृष्टि से साहसिक कदम माना जाता था। इससे उनके प्रगतिशील विचारों और सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध खड़े होने के साहस का परिचय मिलता है। पारिवारिक जीवन का निर्वाह करते हुए भी उन्होंने साहित्य और राष्ट्रसेवा के कार्यों को समान महत्व दिया।

उनकी काव्य रचनाएं अंग्रेजी भाषा में थीं, किंतु उनमें भारतीयता की गहरी छाप दिखाई देती है। उनकी कविताओं में भारतीय प्रकृति, लोकजीवन, प्रेम, करुणा, उत्सव और राष्ट्रभक्ति की मधुर अभिव्यक्ति मिलती है। उनकी प्रमुख कृतियों में 'द गोल्डन थ्रेशहोल्ड', 'द बर्ड ऑफ टाइम' और 'द ब्रोकन विंग' उल्लेखनीय हैं। उनकी कविता 'इन द बाजार्स ऑफ हैदराबाद' भारतीय जीवन की रंगीन छटा का सजीव चित्र प्रस्तुत करती है। 'पालकीवाले' कविता में उन्होंने स्त्री की कोमलता और गरिमा का मार्मिक चित्रण किया है। उनकी रचनाओं में लय, संगीत और भावों की गहनता पाठकों को आकर्षित करती है। महात्मा गांधी ने उनकी मधुर वाणी से प्रभावित होकर उन्हें 'भारत कोकिला' की उपाधि दी।

सन् 1921 में सरोजिनी नायडू भी विदेशी दौरों को समाप्त कर भारत लौट आईं और आंदोलन से जुड़ गईं।

सभाओं में लोगों को संबोधित करते हुए वे गरज उठीं, 'यह मातृभूमि हमारी जननी है और हम इसके वीर सपूत हैं, परंतु अंग्रेजों

भारत कोकिला के जन्मदिन पर विशेष

किसी देश की महानता उसके प्रेम और बलिदान के अमर आदर्शों में निहित होती है। हम उद्देश्य में अधिक ईमानदारी, वाणी में अधिक साहस और कर्म में अधिक निष्ठा चाहते हैं। जब उत्पीड़न होता है, तो आत्मसम्मान का एकमात्र उपाय यह है कि उठकर कहा जाए कि यह आज से समाप्त होना चाहिए क्योंकि न्याय मेरा अधिकार है।

के अत्याचारों ने इसके आंचल को दागदार कर दिया है। पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी भारत माता निरीह आंखों से हमारी ओर देख रही है। हमें प्राणों की आहुति देकर भी इसकी रक्षा करनी चाहिए । वे घृणापूर्वक बोलीं, वह प्रतिशोध की भावना से अभिभूत होकर बोलीं, वे पूर्णतया प्रामाणिकता से बोलीं। भारत उनके माध्यम से मुखर हो उठा था। भारत, टूटा-फूटा भारत, जिसकी काया से रक्त रिस रहा था और जिसका भारी अपमान हुआ था और जिस समय दीर्घा में वह झुंड उठकर खड़ा हुआ, जिसे विशेष तौर पर सभा में व्यवधान डालने के लिए वहीं तैनात किया गया था और उसने सरोजिनी पर व्यंग्य करने की कोशिश की, तो वे चीख उठीं, 'जुबान बंद करो!' और परिणामस्वरूप सभागार में पूर्ण शांति छा गई। बर्बर मुंह ऐसे खामोश हो गए, मानो किसी अपराजेय वीरांगना के वज्र ने उन्हें मूक कर दिया हो।'

साहित्य के साथ-साथ उनका जीवन राष्ट्रसेवा के लिए समर्पित था। गोपालकृष्ण गोखले और महात्मा गांधी के संपर्क में आने के बाद वे स्वतंत्रता आंदोलन से सक्रिय रूप से जुड़ गईं। उन्होंने देशभर में यात्राएं कर लोगों को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया। उनकी वाणी में ऐसा ओज था कि लोग उनके भाषण से प्रभावित होकर आंदोलन में शामिल हो जाते थे। वे असहयोग आंदोलन, सत्याग्रह और नमक आंदोलन में सक्रिय रहीं। कई बार उन्हें कारावास भी भुगतना पड़ा, किंतु उनका साहस अडिग रहा।

1925 में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कानपुर अधिवेशन की अध्यक्ष बनीं। यह गौरव प्राप्त करने वाली वे पहली भारतीय महिला थीं। यह घटना भारतीय नारी के लिए अत्यंत प्रेरणादायक थी। उन्होंने महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में आने और राष्ट्र निर्माण में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। वे मानती थीं कि राष्ट्र की उन्नति तभी संभव है जब महिलाएं शिक्षित, जागरूक और आत्मनिर्भर बनें। उन्होंने महिला अधिकारों और शिक्षा के लिए निरंतर आवाज उठाई।

उनका व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक और प्रभावशाली था। वे हंसमुख, मिलनसार और आत्मविश्वासी थीं। उनके भाषणों में विनोद और व्यंग्य का सुंदर संतुलन रहता था। वे कठिन परिस्थितियों में भी आशा और उत्साह बनाए रखती थीं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उन्हें उत्तर प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त किया गया। वे स्वतंत्र भारत की प्रथम महिला राज्यपाल बनीं। इस पद पर रहते हुए उन्होंने अपने दायित्वों का निर्वहन निष्ठा और गरिमा के साथ किया।

2 मार्च 1949 को उनका निधन हो गया। उनके जाने से राष्ट्र ने एक महान कवयित्री और निर्भीक सेनानी को खो दिया। किंतु उनका जीवन आज भी प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने सिद्ध किया कि नारी केवल कोमलता की प्रतीक नहीं, बल्कि दृढ़ता और नेतृत्व की भी धुरी है। उनका जीवन साहित्य की मधुरता और संघर्ष की कठोरता का अद्भुत संगम था।

सरोजिनी नायडू भारतीय इतिहास की अमूल्य धरोहर हैं। उनकी कविताएं आज भी भारतीय संस्कृति की सुगंध से महकती हैं और उनका राष्ट्रप्रेम नई पीढ़ी को प्रेरित करता है। वे भारतीय नारी शक्ति की जीवंत प्रतीक थीं। उनका संपूर्ण जीवन इस सत्य का प्रमाण है कि प्रतिभा, साहस और समर्पण से व्यक्ति राष्ट्र के इतिहास में अमर हो सकता है। सच ही उन्हें 'भारत कोकिला' कहा गया, क्योंकि उनकी वाणी और काव्य की मधुर गूंज आज भी भारतीय चेतना में सुनाई देती है।

छत्रपति शिवाजी महाराज ने भरी थी अन्याय के विरुद्ध हुंकार

जन जन विचार

सत्रहवीं शताब्दी का दक्कन राजनीतिक अराजकता और अत्याचार से कराह रहा था। मुगल और आदिलशाही सत्ता के बीच आम जनता पिस रही थी। ऐसे दौर में शिवनेरी दुर्ग पर जन्में छत्रपति शिवाजी महाराज ने अन्याय के विरुद्ध खुला विद्रोह छेड़ा। उनका संघर्षकाल केवल सत्ता प्राप्ति की कहानी नहीं, बल्कि स्वाभिमान की पुनर्स्थापना का आंदोलन था।

किशोरावस्था में ही उन्होंने 'हिंदवी स्वराज' का संकल्प लिया। सीमित संसाधनों और मुट्ठीभर साथियों के साथ तोरणा किले की विजय ने साम्राज्यवादी शक्तियों को पहली चुनौती दी। एक-एक कर कई दुर्गों पर अधिकार कर उन्होंने मराठा शक्ति का संगठित आधार तैयार किया। गुरिल्ला युद्ध पद्धति अपनाकर

उन्होंने यह सिद्ध किया कि रणनीति और साहस, विशाल सेना से अधिक प्रभावी हो सकते हैं।

बीजापुर के सेनापति अफजल खान के साथ प्रतापगढ़ में हुई ऐतिहासिक भेंट उनके अदम्य आत्मविश्वास का प्रमाण बनी। शिवाजी ने संकट को अवसर में बदला और शत्रु के आतंक का अंत किया। बाद में मुगल सम्राट औरंगज़ेब द्वारा आगरा में नजरबंदी भी उनके संकल्प को तोड़ न सकी। उनका साहसिक पलायन मुगल सत्ता के अभिमान पर करारा प्रहार था।

शिवाजी का संघर्ष केवल युद्ध तक सीमित नहीं था। उन्होंने न्यायपूर्ण प्रशासन, महिला सम्मान की रक्षा और सुदृढ़ नौसेना की स्थापना कर स्वराज को मजबूत आधार दिया। उनका जीवन संदेश देता है कि स्वतंत्रता भीख में नहीं मिलती- उसे साहस, संगठन और त्याग से अर्जित करना पड़ता है। उनका संघर्ष आज भी अन्याय के विरुद्ध खड़े होने की प्रेरणा देता है।

अमेरिका ने टॉयलेट पेपर की तरह किया इस्तेमाल

पाकिस्तान के रक्षा मंत्री का बड़ा बयान

जन जन विचार
...नई दिल्ली/इस्लामाबाद

आर्थिक संकट और बढ़ते आतंकवाद से जूझ रहे पाकिस्तान में अब अमेरिका को लेकर तीखे बयान सामने आए हैं। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने नेशनल असेंबली में कहा कि अमेरिका ने अपने हित साधने के लिए पाकिस्तान का इस्तेमाल किया और काम निकल जाने के बाद 'टॉयलेट पेपर की तरह फेंक दिया।'

रक्षा मंत्री ने देश में बढ़ते आतंकवाद, आर्थिक बदहाली और आंतरिक अस्थिरता के लिए अमेरिका तथा पूर्व सैन्य शासकों को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने स्वीकार किया कि दो अफगान युद्धों में शामिल होना पाकिस्तान की बड़ी भूल थी, जिसका खामियाजा आज देश भुगत रहा है।

पाकिस्तान इस समय एक ओर बलूचिस्तान में विद्रोह की चुनौती झेल रहा है, तो दूसरी ओर तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) के हमलों से जूझ रहा है। अफगान तालिबान के साथ भी रिश्तों में तल्खी बढ़ी है।

ख्वाजा आसिफ ने कहा कि 11 सितंबर 2001 के बाद अमेरिका की 'आतंक के खिलाफ जंग' में शामिल होना पाकिस्तान के लिए विनाशकारी साबित हुआ। उनका दावा है कि अमेरिका क्षेत्र से निकल गया, लेकिन पाकिस्तान हिंसा, कट्टरता और आर्थिक संकट के दलदल में फंस गया।

रक्षा मंत्री ने पूर्व सैन्य शासकों जियाउल हक और परवेज मुशर्रफ पर निशाना साधते हुए कहा कि अफगान युद्ध में शामिल होना इस्लाम के लिए नहीं, बल्कि महाशक्ति को खुश करने के लिए था। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि संघर्ष में मारे गए सैनिकों की संख्या को अक्सर सार्वजनिक नहीं किया जाता। विशेषज्ञ मानते हैं कि यह बयान घरेलू दबाव और अंतर्राष्ट्रीय अलगाव के बीच सरकार की 'राजनीतिक रणनीति' भी हो सकता है। पाकिस्तान लंबे समय से आतंकवाद को लेकर वैश्विक मंचों पर आलोचना झेलता रहा है।

तुर्किये की संसद बनी 'फाइट क्लब'

अंकारा। तुर्किये की संसद उस समय जंग के मैदान में तब्दील हो गई, जब न्याय मंत्री की नियुक्ति को लेकर सत्तारूढ़ और विपक्षी सांसद आपस में भिड़ गए। हंगामे के चलते सदन की कार्यवाही स्थगित करनी पड़ी। कैबिनेट फेरबदल के तहत न्याय मंत्री पद पर एकिन गर्लेक को शपथ दिलाई जा रही थी। विपक्षी दलों ने इस नियुक्ति का विरोध किया और शपथ ग्रहण प्रक्रिया को रोकने की कोशिश की। इसी दौरान सत्ताधारी दल के सांसदों और विपक्षी सदस्यों के बीच तीखी बहस शुरू हो गई।

भारत-अफगानिस्तान से तनातनी, चीन और ईरान भी नाराज

विदेश नीति पर घिरी पाकिस्तान सरकार

जन जन विचार
...नई दिल्ली/इस्लामाबाद

पाकिस्तान की विदेश नीति को लेकर सियासी घमासान तेज हो गया है। जमीयत उलेमा-ए-इस्लाम (एफ) के प्रमुख फजलुर रहमान ने प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए अफगान नीति को 'पूरी तरह विफल' करार दिया है।

रावलपिंडी में एक सभा को संबोधित करते हुए मौलाना ने कहा कि अफगानिस्तान के साथ व्यापार लगभग ठप है, लेकिन चरमपंथी तत्व सीमा पार करते रहते हैं। उन्होंने सवाल उठाया कि यदि आतंकवादी अफगानिस्तान से आ रहे हैं, तो उन्हें रोका क्यों नहीं जा रहा।

फजलुर रहमान ने दावा किया कि पाकिस्तान की नीतियों के कारण भारत और अफगानिस्तान के साथ संबंध तनावपूर्ण हैं, वहीं चीन और ईरान भी असंतुष्ट बताए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि कोई भी देश तब तक स्थिर नहीं रह सकता, जब

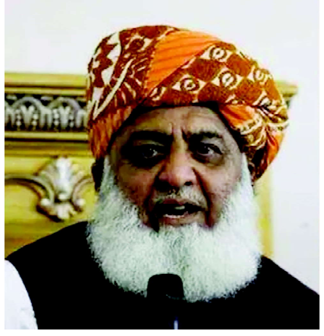

उसकी विदेश नीति अलगाव और अविश्वास को जन्म दे।

मौलाना ने यह भी आरोप लगाया कि पाकिस्तान की विदेश नीति नागरिक सरकार नहीं, बल्कि सैन्य प्रतिष्ठान तय करता है। उनके अनुसार, अलग-अलग सैन्य नेतृत्व के बदलने से नीति में भी उतार-चढ़ाव आता है-कभी वार्ता की बात होती है, तो कभी युद्ध की।

विश्लेषकों का मानना है कि यह बयान घरेलू असंतोष और सुरक्षा चुनौतियों के बीच सरकार पर बढ़ते दबाव को दर्शाता है। पाकिस्तान इस समय आर्थिक संकट, सीमा पार तनाव और आतंकी हमलों जैसी बहुस्तरीय चुनौतियों का सामना कर रहा है।

बारह लाख तक आयकर मुक्त

कभी100 में से 97.75 रुपए ले लेती थी सरकार

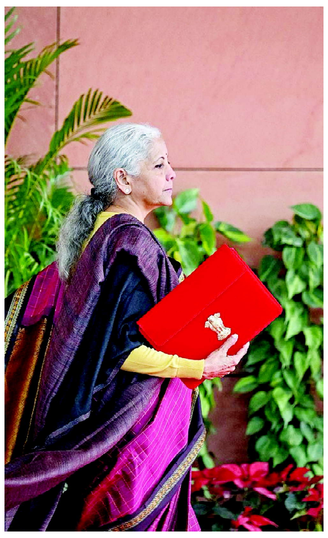

जन जन विचार
...नई दिल्ली

केंद्रीय बजट 2026-27 में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा 12 लाख रुपए तक की आय को करमुक्त किए जाने की घोषणा भारतीय कर व्यवस्था के इतिहास में एक बड़ा बदलाव मानी जा रही है।

1947 : सिर्फ 1500 रुपए थी टैक्स फ्री सीमा

आजाद भारत का पहला बजट 16 नवंबर 1947 को देश के पहले वित्त मंत्री आर. के. शनमुखम चेट्टी ने पेश किया था। उस समय मात्र 1500 रुपए तक की आय ही करमुक्त थी।

1973-74 : 97.75 फीसदी टैक्स का 'सोशलिस्ट' दौर

सत्तर के दशक में आयकर की अधिकतम दर 85 फीसदी थी, जो सरचार्ज मिलाकर 97.75 फीसदी तक पहुंच गई। अर्थात 2 लाख रुपए से अधिक आय पर 100 रुपए में से 97.75 रुपए सरकार ले लेती थी और करदाता के पास केवल 2.25 रुपए बचते थे।

टैक्स से सामाजिक प्रयोग

1955 में शादीशुदा और अविवाहितों के लिए अलग-अलग छूट सीमा तय की गई। 1958 में बच्चों की संख्या के आधार पर आयकर छूट दी गई। आज की तुलना में उस दौर की व्यवस्था कहीं अधिक जटिल थी।

अब मध्यम वर्ग को राहत

2 लाख रुपए तक की आय करमुक्त होने से मध्यम वर्ग की क्रय शक्ति बढ़ने की उम्मीद है। यह बदलाव भारत की आर्थिक यात्रा में एक अहम पड़ाव माना जा रहा है।

1947 के 1500 रुपए से 2026 के 12 लाख रुपए तक का सफर केवल आंकड़ों का बदलाव नहीं, बल्कि भारत की बदलती आर्थिक सोच और कर सुधारों की कहानी है।

गतिविधियों से बच्चे सीखेंगे जिंदगी के जरूरी सबक

जन जन विचार
...✍ रामेश्वर शर्मा

आज के दौर में बच्चों की परवरिश केवल पढ़ाई और अनुशासन तक सीमित नहीं रह गई है। अब जरूरत है ऐसे पालन-पोषण की, जिसमें बच्चे अनुभव और गतिविधियों के माध्यम से सीखें। इसी सोच को गतिविधि-आधारित पालन-पोषण कहा जाता है।

इस पद्धति में माता-पिता बच्चों को सिर्फ निर्देश नहीं देते, बल्कि उन्हें खेल, कला, प्रयोग और रोजमर्रा के कामों में शामिल कर सीखने का अवसर देते हैं। इससे बच्चों का सामाजिक, मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक विकास बेहतर होता है।

बच्चे जब खुद किसी काम में भाग लेते हैं, तो सीखना आसान और स्थायी हो जाता है। जैसे-खाना बनाते समय मापन सीखना या बगीचे में पौधों की देखभाल करना।

बच्चे केवल सुनते नहीं, बल्कि खुद करके समझते हैं, जिससे विषय से गहरा जुड़ाव बनता है। गतिविधियां बच्चे की रुचि और जरूरत के अनुसार चुनी जाती हैं, जिससे उसका उत्साह बना रहता है।

रचनात्मकता के साथ-साथ समस्या का निदान

खेल और रचनात्मक गतिविधियां

आज बच्चे अधिक समय मोबाइल और टीवी पर बिताते हैं, जो उनके विकास के लिए हानिकारक हो सकता है। इसलिए उन्हें सक्रिय खेलों से जोड़ना जरूरी है।

बोर्ड गेम और पहेलियां खेलें
आउटडोर खेल अपनाएं
चित्रकला, संगीत व नृत्य सिखाएं

जीवन कौशल सिखाना

बच्चों को रोजमर्रा के कामों में शामिल करने से वे आत्मनिर्भर बनते हैं।

खाना बनाने में मदद
कमरे की सफाई
कपड़े तह करना
पौधों की देखभाल

इससे उनमें जिम्मेदारी और आत्मविश्वास बढ़ता है।

सहभागिता और संवाद

बच्चों से बातचीत और सहभागिता बेहद जरूरी है।

उनके विचार सुनें
सवाल पूछें
राय का सम्मान करें

इससे स्वतंत्र सोच और आत्मविश्वास विकसित होता है।

रूटीन और अनुशासन

संतुलित दिनचर्या बच्चों में समय प्रबंधन और अनुशासन सिखाती है।

पढ़ाई, खेल का समय तय करें
दिनचर्या में लचीलापन रखें

इससे बच्चे बिना दबाव के जिम्मेदार बनते हैं।

पहेलियां, प्रयोग व रोल-प्ले बच्चों की सोचने की क्षमता को बढ़ाते हैं।

गतिविधि-आधारित पालन-पोषण वह तरीका है जिसमें बच्चे की परवरिश सिर्फ निर्देश या आदेश देने के बजाय उन्हें गतिविधियों और अनुभवों के माध्यम से सीखने का मौका देकर की जाती है। इसमें बच्चे को सक्रिय रूप से खेलने, सीखने, खोजने और जीवन के रोजमर्रा के कामों में शामिल किया जाता है। यह तरीका बच्चों के सामाजिक, भावनात्मक, मानसिक और शारीरिक विकास को बढ़ावा देता है। इसमें माता-पिता बच्चे के साथ खेल, प्रयोग, कला, पढ़ाई और जीवन के रोजमर्रा के कामों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। यह सिर्फ 'सिखाने' का तरीका नहीं है, बल्कि बच्चे को अनुभव और खोज के माध्यम से सीखने का मौका देना है।

गतिविधि-आधारित पालन-पोषण बच्चों को केवल अच्छा विद्यार्थी नहीं, बल्कि अच्छा इंसान भी बनाता है। यह उन्हें जीवन की चुनौतियों से निपटने, आत्मनिर्भर बनने और समाज में सकारात्मक भूमिका निभाने के लिए तैयार करता है।

आज जरूरत है कि माता-पिता बच्चों के साथ समय बिताएं, उन्हें अनुभव दें और सीखने को आनंदमय बनाएं ताकि वे आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सकें।

गतिविधि-आधारित पालन-पोषण के फायदे

सामाजिक और भावनात्मक विकास
सहयोग करना सीखते हैं
भावनाओं को समझते हैं
आत्म-नियंत्रण बढ़ता है

सीखने की मजेदार प्रक्रिया
खेल-खेल में सीखना
रुचि बढ़ना
ज्ञान लंबे समय तक याद रहना

रचनात्मकता और आत्मनिर्भरता
नई सोच विकसित होती है
समस्या सुलझाने की क्षमता बढ़ती है
जिम्मेदारी आती है

सीबीएसई : उत्तर सही जगह लिखना जरूरी

सीबीएसई बोर्ड की वार्षिक परीक्षाएं 17 फरवरी से शुरू होने वाली हैं। परीक्षा में सिर्फ उत्तर देने से ज्यादा जरूरी होता है सही तरीके से उसे प्रस्तुत करना। इस वर्ष की बोर्ड परीक्षाएं विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि कई नए नियम और सुधार लागू किए गए हैं। ऐसे में छात्रों के लिए जरूरी है कि वे नए नियमों और बदलावों को अच्छी तरह समझ लें, ताकि परीक्षा कक्ष में किसी प्रकार की असुविधा न हो।

अब उत्तर पुस्तिकाओं की जांच डिजिटल माध्यम से कंप्यूटर स्क्रीन पर की जाएगी। इसी वजह से अब केवल सही उत्तर लिखना ही काफी नहीं होगा, बल्कि उसे सही सेक्शन में लिखना भी जरूरी होगा।

नया सेक्शन रूल

सीबीएसई ने कक्षा 10 की साइंस और सोशल साइंस परीक्षाओं में नया 'सेक्शन नियम' लागू किया है। इस नियम के अनुसार-
हर प्रश्न का उत्तर उसी सेक्शन में लिखना होगा
यदि सही उत्तर गलत सेक्शन में लिखा गया, तो अंक नहीं मिलेंगे
मूल्यांकनकर्ता सेक्शन के अनुसार ही जांच करेंगे
डिजिटल सिस्टम गलत जगह लिखे उत्तर को नजरअंदाज कर सकता है

विज्ञान की उत्तर पुस्तिका को तीन भागों में बांटना होगा-
भौतिक विज्ञान
रसायन विज्ञान
जीव विज्ञान
हर विषय का उत्तर उसी भाग में लिखना अनिवार्य होगा।

सोशल साइंस की उत्तर पुस्तिका को चार भागों में बांटा जाएगा-
इतिहास
भूगोल
राजनीति विज्ञान
अर्थशास्त्र
उत्तर संबंधित सेक्शन में ही लिखें।

डिजिटल मूल्यांकन प्रणाली

अब उत्तर पुस्तिकाएं- पहले स्कैन की जाएंगी, फिर कंप्यूटर पर जांची जाएंगी, परीक्षक स्क्रीन पर ही नंबर देंगे।

यह प्रणाली तेज और पारदर्शी है, लेकिन इसमें गलत जगह लिखा उत्तर आसानी से छूट सकता है।

गलत सेक्शन में लिखने पर क्या होगा?

अगर छात्र, इतिहास का उत्तर भूगोल में लिखे, फिजिक्स का उत्तर केमिस्ट्री में लिखे, तो-
डिजिटल सिस्टम उसे पहचान नहीं पाएगा, परीक्षक को वह उत्तर दिखाई नहीं देगा। छात्र को उस प्रश्न के अंक नहीं मिलेंगे

यहां तक कि पुनर्मूल्यांकन में भी राहत मिलना मुश्किल होगा।

रखें ध्यान-
उत्तर शुरू करने से पहले सेक्शन का नाम साफ लिखें
अलग-अलग सेक्शन के उत्तर आपस में न मिलाएं
हर नए प्रश्न से पहले उचित स्थान छोड़ें
प्रश्नपत्र के निर्देश पहले ध्यान से पढ़ें

रोजी-रोजगार

आईओसीएल में 637 अप्रेंटिस वैकेंसी

इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल) ने अप्रेंटिस पदों पर कुल 637 रिक्तियों की घोषणा की है। आईओसीएल अप्रेंटिस भर्ती के लिए ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया 7 फरवरी से शुरू हो चुकी है। इच्छुक उम्मीदवार 20 फरवरी तक आवेदन कर सकते हैं। आवेदन केवल कंपनी की आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से किया जाएगा। इस भर्ती में आवेदन करने के लिए उम्मीदवार का-12वीं पास, आईटीआई, डिप्लोमा या स्नातक होना आवश्यक है। आयु सीमा 18 से 24 वर्ष निर्धारित की गई है। आरक्षित वर्ग के उम्मीदवारों को नियमानुसार छूट मिलेगी। आईओसीएल द्वारा जारी वैकेंसी विभिन्न ट्रेड और डिसिप्लिन में है, जिनमें प्रमुख रूप से- अटेंडेंट ऑपरेटर (केमिकल प्लांट), फिटर / मैकेनिकल, टेक्नीशियन (केमिकल, इलेक्ट्रिकल, इंस्ट्रूमेंटेशन), डाटा एंट्री ऑपरेटर, सेक्रेटेरियल असिस्टेंट, अकाउंटेंट जैसे पद शामिल हैं। कुल मिलाकर 637 पदों पर भर्ती की जाएगी।

केवि, मालीगांव में वॉक-इन इंटरव्यू

केंद्रीय विद्यालय एनएफआर मालीगांव, गुवाहाटी द्वारा शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए अंशकालिक संविदा शिक्षकों की नियुक्ति हेतु वॉक-इन इंटरव्यू आयोजित किया जा रहा है। यह साक्षात्कार 23 एवं 24 फरवरी 2026 को सुबह 8 बजे से विद्यालय परिसर में होगा।

23 फरवरी : **पीजीटी**- भौतिकी, रसायन, गणित, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अंग्रेजी **टीजीटी**- अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत, सामाजिक विज्ञान, गणित, असमिया

24 फरवरी : **पीजीटी**- कंप्यूटर साइंस, कंप्यूटर इंस्ट्रक्टर, पीआरटी, बास्केटबॉल कोच, योग प्रशिक्षक, संगीत एवं कला प्रशिक्षक, काउंसलर, विशेष शिक्षक, नर्स एवं डॉक्टर।

अधिक जानकारी एवं योग्यता संबंधी विवरण के लिए अभ्यर्थी विद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट https://maligaon.kvs.ac.in पर विजिट कर सकते हैं।

श्रीलंका में महामुकाबल, भिड़ेंगे भारत पाक

भारत से मुकाबले पर पाकिस्तान का यू-टर्न
अंतर्राष्ट्रीय दबाव और बातचीत के बाद बदला फैसला

जन जन विचार
...✍ स्पार्ट्स डेस्क

भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले टी20 विश्व कप 2026 के बहुप्रतीक्षित मुकाबले को लेकर बड़ा घटनाक्रम सामने आया है। पाकिस्तान ने 15 फरवरी को कोलंबो में होने वाले मैच के बहिष्कार के फैसले से पीछे हटते हुए भारत के खिलाफ खेलने पर सहमति जता दी है।

यह मैच आर प्रेमदासा स्टेडियम में खेला जाएगा।

पाकिस्तान का यह यू-टर्न अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी), पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड और बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड के साथ हुई उच्चस्तरीय बातचीत के बाद संभव हुआ है।

सूत्रों के अनुसार, पाकिस्तान सरकार ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर अपना फैसला वापस लिया। इसमें कहा गया कि, 'वैश्विक क्रिकेट की प्रतिष्ठा, मित्र देशों का आग्रह और खेल भावना को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया है।

इस पूरे घटनाक्रम में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी), पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड और बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड की अहम भूमिका रही।

बांग्लादेश पर नहीं लगेगी पेनल्टी

आईसीसी ने बांग्लादेश पर नरम रुख अपनाते हुए कोई आर्थिक दंड नहीं लगाने का फैसला किया है। यह निर्णय पीसीबी और बीसीबी से बातचीत के बाद लिया गया।

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ को इस विवाद और बातचीत के नतीजों की जानकारी पीसीबी अध्यक्ष मोहसीन नकवी ने दी। इसके बाद सरकार ने औपचारिक रूप से टीम को भारत के खिलाफ खेलने की अनुमति दे दी।

इस विवाद में बांग्लादेश की भूमिका भी निर्णायक रही। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने पाकिस्तान से औपचारिक रूप से अपील की थी कि वह टूर्नामेंट की गरिमा बनाए रखे। साथ ही श्रीलंका, संयुक्त अरब अमीरात और अन्य देशों ने भी पाकिस्तान पर नरम लेकिन प्रभावी दबाव बनाया।

पूरा विवाद तब शुरू हुआ, जब बांग्लादेश के खिलाड़ी मुस्तफिजुर रहमान को आईपीएल से बाहर किया गया। इसके बाद बांग्लादेश बोर्ड ने सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए भारत आने से मना कर दिया।

आईसीसी द्वारा कार्रवाई के बाद पाकिस्तान ने बांग्लादेश के समर्थन में भारत के खिलाफ मैच के बहिष्कार की घोषणा कर दी थी।

यही 'बहिष्कार ड्रामा' बाद में यू-टर्न में बदल गया।

विशेषज्ञों का मानना है कि पाकिस्तान का यह फैसला व्यावहारिक मजबूरी का नतीजा है। इसी कारण अंतत: पाकिस्तान को पीछे हटना पड़ा।

टी20 विश्व कप: रोमांचक जंग कई दिग्गजों पर संकट के बादल

जन जन विचार
...✍ स्पार्ट्स डेस्क

टी20 विश्व कप 2026 के ग्रुप चरण में मुकाबले तेज हो गए हैं और अंकतालिका कई चौंकाने वाले संकेत दे रही है। कुछ पारंपरिक दिग्गज मजबूत स्थिति में हैं, तो कुछ टीमों के लिए आगे की राह कठिन होती जा रही है।

ग्रुप ए : पाकिस्तान शीर्ष पर भारत की मजबूत शुरुआत

ग्रुप ए में पाकिस्तान दो मैच जीतकर 4 अंकों के साथ शीर्ष पर है।

भारत ने एक मैच खेलकर जीत दर्ज की है और उसका नेट रन रेट सबसे बेहतर (1.450) है, जो आगे चलकर अहम साबित हो सकता है।

नीदरलैंड ने भी संतुलित प्रदर्शन किया है, जबकि नामीबिया और अमेरिका अभी अंकतालिका में नीचे हैं।

संकेत साफ है-भारत यदि अगला मुकाबला जीतता है तो शीर्ष स्थान की दौड़ रोमांचक हो जाएगी।

ग्रुप बी : तीन टीमों की बराबरी

ग्रुप बी में ऑस्ट्रेलिया, जिम्बाब्वे और श्रीलंका ने अपने-अपने शुरुआती मैच जीतकर 2-2 अंक अर्जित किए हैं। हालांकि नेट रन रेट में ऑस्ट्रेलिया आगे है। आयरलैंड और ओमान के लिए वापसी की चुनौती कठिन दिख रही है।

ग्रुप सी : वेस्टइंडीज का दबदबा

ग्रुप सी में वेस्टइंडीज दो जीत के साथ 4 अंक लेकर शीर्ष पर है। स्कॉटलैंड और इंग्लैंड के बीच दूसरे स्थान की जंग दिलचस्प है। नेपाल और इटली को अब हर मैच 'करो या मरो' की तरह खेलना होगा।

ग्रुप डी : न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका अजेय

ग्रुप डी में न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका दोनों ने दो-दो जीत दर्ज कर 4-4 अंक हासिल किए हैं। नेट रन रेट के आधार पर न्यूजीलैंड थोड़ा आगे है। अफगानिस्तान, यूएई और कनाडा को अब चमत्कार की उम्मीद करनी होगी।

पाकिस्तान, वेस्टइंडीज, न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका फिलहाल सेमीफाइनल की ओर मजबूत कदम बढ़ा रहे हैं।

भारत और ऑस्ट्रेलिया जैसी टीमों के पास कम मैच खेले होने के कारण अवसर अधिक हैं।

नेट रन रेट इस बार कई ग्रुपों में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

टी20 की इस जंग में हर मुकाबला नई कहानी लिख रहा है। आने वाले दिनों में अंकतालिका का संतुलन पलट भी सकता है, क्योंकि क्रिकेट में आखिरी गेंद तक कुछ भी संभव है।

भारत-पाकिस्तान मैच से पहले बाबर आजम का उड़ा मजाक

जन जन विचार
...✍ स्पार्ट्स डेस्क

भारत-पाकिस्तान मुकाबले से पहले पाकिस्तान के पूर्व कप्तान बाबर आजम अपनी फॉर्म को लेकर आलोचना के घेरे में हैं। टी20 विश्व कप 2026 के शुरुआती मैचों में अपेक्षित प्रदर्शन नहीं करने के बाद एक पाकिस्तानी टीवी शो में उनके खेल पर खुलकर टिप्पणी की गई।

नीदरलैंड के खिलाफ 18 गेंदों में 15 रन और अमेरिका के विरुद्ध 32 गेंदों पर 46 रन बनाने के बावजूद उनकी स्ट्राइक रेट पर सवाल उठ रहे हैं। शो 'हारना मना है' में पूर्व बल्लेबाज अहमद शहजाद, तेज गेंदबाज मोहम्मद आमिर और पूर्व विकेटकीपर

राशिद लतीफ ने बाबर पर तंज कसे।

अहमद शहजाद ने कहा कि यदि बाबर भारत के खिलाफ मैच जिताऊ पारी खेलते हैं तो वह पूरे शो की टीम को अपनी ओर से डिनर कराएंगे। वहीं मोहम्मद आमिर से पूछा गया कि अगर बाबर 150 से अधिक स्ट्राइक रेट से अर्धशतक लगाकर टीम को जीत दिलाते हैं तो क्या वे संन्यास से वापसी करेंगे-जिस पर आमिर ने मुस्कुराते हुए हामी भर दी।

राशिद लतीफ ने चुटकी लेते हुए कहा, 'वह वैसे भी इतनी देर तक बल्लेबाजी नहीं करते', जिस पर स्टूडियो में हंसी छूट गई। भारत-पाक मुकाबले से पहले बाबर आजम पर दबाव बढ़ गया है।

महाशिवरात्रि

आत्मचिंतन व साधना का पर्व

जन जन विचार
...✍ धर्म डेस्क

महाशिवरात्रि केवल एक पर्व नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, साधना और चेतना के जागरण का पावन अवसर है। यह दिन भगवान शिव की उपासना को समर्पित है, जो संहारक होने के साथ-साथ सृष्टि के संतुलन और कल्याण के प्रतीक भी हैं। फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाई जाने वाली यह रात्रि हमें संयम, तप और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है।

हिंदू परंपरा में शिव को 'महादेव' कहा गया है-अर्थात देवों के भी देव। वे सरलता, वैराग्य और करुणा के प्रतीक हैं। उनके गले में वासुकि नाग, मस्तक पर चंद्रमा और जटाओं से बहती गंगा यह संदेश देती है कि प्रकृति, जीवन और मानव के बीच गहरा संबंध है। शिव हमें सिखाते हैं कि भौतिक सुखों से ऊपर उठकर आत्मिक शांति को महत्व देना ही सच्चा जीवन है। महाशिवरात्रि की रात्रि विशेष मानी जाती है। इस दिन भक्त उपवास रखते हैं, रात्रि जागरण करते हैं और ओम नमः शिवाय का जाप करते हैं। यह जागरण केवल शरीर का नहीं, बल्कि आत्मा का भी होता है। मन की नकारात्मकता, अहंकार और क्रोध को त्याग कर सकारात्मक सोच अपनाने का यही सही समय है।

आज के भागदौड़ भरे जीवन में तनाव, प्रतिस्पर्धा और असंतोष बढ़ता जा रहा है। ऐसे समय में महाशिवरात्रि हमें ठहरने, सोचने और स्वयं को समझने का अवसर देती है। शिव का जीवन हमें सिखाता है कि सादगी में ही सच्चा सुख है और सेवा व समर्पण ही जीवन का मूल मंत्र है। यह पर्व सामाजिक समरसता का भी संदेश देता है। शिव सभी के आराध्य हैं-गरीब हो या अमीर, शिक्षित हो या अशिक्षित। शिवालय में सभी भक्त समान भाव से पूजा करते हैं। यह हमें समानता, भाईचारे और एकता का पाठ पढ़ाता है। महाशिवरात्रि पर जल, दूध, बेलपत्र और धतूरा अर्पित करना केवल परंपरा नहीं, बल्कि प्रकृति से जुड़ने का प्रतीक है। यह हमें पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के सम्मान की प्रेरणा भी देता है। आज आवश्यकता है कि हम इस पर्व को केवल रस्मों तक सीमित न रखें, बल्कि इसके संदेश को जीवन में उतारें। ईमानदारी, संयम, सेवा और करुणा को अपनाकर ही हम सच्चे अर्थों में शिवभक्त बन सकते हैं। अंत में, महाशिवरात्रि हमें याद दिलाती है कि जीवन में अंधकार कितना भी गहरा क्यों न हो, साधना और विश्वास से प्रकाश अवश्य आता है। यही शिव तत्व है-जो हमें भीतर से मजबूत बनाता है और सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। 'हर हर महादेव' केवल नारा नहीं, बल्कि आत्मबल और विश्वास का प्रतीक है। आइए, इस महाशिवरात्रि पर संकल्प लें-स्वयं को बेहतर बनाने और समाज को बेहतर बनाने का।

क्यों मनाते हैं शिवरात्रि

महाशिवरात्रि हिंदू धर्म का एक अत्यंत पवित्र और महत्वपूर्ण पर्व है। यह फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को मनाई जाती है। इस वर्ष यह तिथि 15 फरवरी को पड़ रही है। इस दिन भगवान शिव की विशेष पूजा, व्रत और रात्रि जागरण किया जाता है।

1. शिव-पार्वती विवाह

धार्मिक मान्यता के अनुसार इसी दिन भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह हुआ था। इसलिए यह दिन दांपत्य सुख और पारिवारिक शांति का प्रतीक माना जाता है।

2. नीलकंठ बनने की कथा

समुद्र मंथन के समय निकले विष को शिव ने पीकर संसार की रक्षा की। इस कारण उनका कंठ नीला हो गया और वे 'नीलकंठ' कहलाए।

3. शिवलिंग प्रकट दिवस

कई पुराणों में उल्लेख है कि इसी दिन शिवलिंग रूप में भगवान शिव प्रकट हुए थे। इसलिए शिवलिंग पूजा का विशेष महत्व है।

बालों पर भारी पड़ेगी ये गलतियां

आज के समय में कम उम्र में भी बालों का झड़ना एक आम और गंभीर समस्या बन चुका है। इससे परेशान होकर लोग बिना सोचे-समझे तरह-तरह के घरेलू नुस्खे और इंटरनेट टिप्स आजमाने लगते हैं, जो फायदे की जगह नुकसान पहुंचा देते हैं। ये 5 गलतियां न करे-

जरूरत से ज्यादा तेल लगाना : अधिक तेल लगाने से स्कैल्प के पोर्स बंद हो जाते हैं और गंदगी चिपकने लगती है, जिससे डैंड्रफ और हेयर फॉल बढ़ता है। हफ्ते में दो बार हल्की मालिश काफी है।

हर किसी का बताया नुस्खा अपनाना : प्याज, नींबू या सिरका जैसे घरेलू उपाय हर स्कैल्प के लिए सही नहीं होते। बिना समझे इस्तेमाल करने से स्कैल्प को नुकसान हो सकता है। **रोजाना शैंपू करना :** हर दिन शैंपू करने से बालों का प्राकृतिक तेल खत्म हो जाता है, जिससे बाल रूखे और कमजोर हो जाते हैं। हफ्ते में 2-3 बार शैंपू करना बेहतर है। **केमिकल प्रोडक्ट्स का ज्यादा इस्तेमाल :** सीरम, स्प्रे और अन्य केमिकल प्रोडक्ट्स शुरुआत में असर दिखाते हैं, लेकिन लंबे समय में जड़ों को नुकसान पहुंचाते हैं। **गीले बालों में कंघी करना :** गीले बाल सबसे कमजोर होते हैं। इस समय कंघी करने से बाल ज्यादा टूटते हैं। पहले सुखाएं, फिर चौड़े दांतों वाली कंघी का इस्तेमाल करें।

भक्ति, सेवा व मानवता के प्रतीक रामकृष्ण

फाल्गुन शुक्ल द्वितीया को मनाई जाने वाली रामकृष्ण जयंती महान संत रामकृष्ण परमहंस की स्मृति का पावन अवसर है। यह दिन केवल एक महापुरुष का जन्मदिन नहीं, बल्कि आत्मिक जागरण, प्रेम और मानव सेवा की प्रेरणा का पर्व है।

उन्नीसवीं सदी में जन्मे रामकृष्ण परमहंस ने अपने जीवन से यह सिद्ध किया कि ईश्वर तक पहुंचने के सभी मार्ग सत्य हैं। उन्होंने हिंदू, मुस्लिम और ईसाई परंपराओं की साधना कर मानवता को धार्मिक सहिष्णुता और भाईचारे का संदेश दिया। उनका प्रसिद्ध कथन 'जितने मत, उतने ही पथ' -आज भी समाज को जोड़ने का कार्य करता है।

रामकृष्ण परमहंस भक्ति, त्याग और सादगी के प्रतीक थे। उनका मानना था कि सच्ची साधना वही है, जिसमें अहंकार का त्याग और मानव सेवा का भाव हो। उनके शिष्य स्वामी विवेकानंद ने गुरु के विचारों को विश्व पटल पर पहुंचाकर भारतीय संस्कृति को नई पहचान दिलाई।

आज जब समाज तनाव, भेदभाव और स्वार्थ से जूझ रहा है, तब रामकृष्ण परमहंस की शिक्षाएं हमें प्रेम, सहनशीलता और करुणा का मार्ग दिखाती हैं। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि सच्चा धर्म मानवता की सेवा और आत्मिक शांति में ही निहित है।

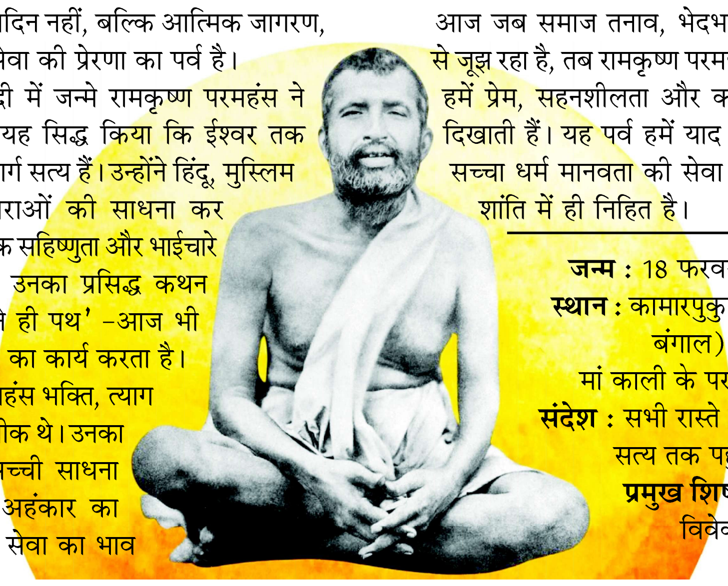

जन्म : 18 फरवरी 1836

स्थान : कामारपुकुर (पश्चिम बंगाल)

मां काली के परम भक्त

संदेश : सभी रास्ते एक ही परम सत्य तक पहुंचते हैं।

प्रमुख शिष्य : स्वामी विवेकानंद